DELHI PUBLIC SCHOOL
BOPAL AHMEDABAD

# उन्मुक्त

## विचारों की उड़ान....

(२०२५ -२०२६)

**निदेशिका की कलम से**

**श्रीमती वंदना जोशी**
**निदेशिका**

मेरे प्यारे बच्चो !!!

जीवन एक निरंतर सीखने और आगे बढ़ने की यात्रा है। हर दिन आपको नई संभावनाएँ देता है, जिन्हें पहचानकर और अपनाकर ही आप अपने व्यक्तित्व को सँवार सकते हैं। शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य केवल पुस्तकीय ज्ञान अर्जित करना नहीं, बल्कि चरित्र, अनुशासन, संवेदनशीलता और जिम्मेदारी का विकास करना है।

आप चुनौतियों को अवसर में बदलना सीखें, असफलताओं को अनुभव में और सफलता को विनम्रता में। अपने समय का सदुपयोग करें, लक्ष्य स्पष्ट रखें और कार्य में निष्ठा बनाए रखें। मेहनत, ईमानदारी और सकारात्मक सोच, सफलता के सबसे मजबूत स्तंभ हैं।

साथ ही, अपने परिवेश और प्रकृति के प्रति भी सजग रहें। वृक्षों की रक्षा करें, जल का संरक्षण करें और पर्यावरण को स्वच्छ बनाए रखें – क्योंकि स्वस्थ प्रकृति ही उज्ज्वल भविष्य को सुनिश्चित करती है।

देश के प्रति अपने कर्तव्यों को हमेशा सर्वोपरि मानें। राष्ट्र की प्रगति तभी संभव है जब उसके नागरिक अपने कार्य, आचरण और अपनी सोच में जिम्मेदारी और निष्ठा दिखाएँ। आप सभी अपने ज्ञान, कौशल और सद्गुणों का उपयोग समाज और देश की भलाई के लिए करें – यही सच्ची देशभक्ति है।

विद्यालय ने अपने 30 वर्षों के समयांतराल में बहुत ही संवेदनशीलता के साथ अभिभावकों से जोड़ रखा है। इस पत्रिका के माध्यम से बताया है कि प्रत्येक में असीम संभावनाएँ हैं। अपने सपनों को पंख दें, पर अपनी जड़ों और अपने देश से जोड़ कर रखें। यही संतुलन आपको एक सफल, संवेदनशील और जिम्मेदार नागरिक बनाएगा।

आप सभी के उज्ज्वल और सार्थक भविष्य की हार्दिक शुभकामनाएँ।

सप्रेम शुभकामनाओं सहित,

**वंदना जोशी**
**निदेशिका**
**डी.पी.एस. बोपल**

**श्रीमती सबीना साहिनी**
**प्रधानाचार्या**

## प्रधानाचार्या की कलम से

प्रिय विद्यार्थियो !!!

इस वर्ष हमारा विद्यालय अपनी गौरवपूर्ण '30 वर्ष की यात्रा' पूरी कर रहा है। तीन दशकों की इस यात्रा में हम सभी ने मिलकर न केवल शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्टता प्राप्त की है, बल्कि अनगिनत सपनों को पंख दिए हैं। आप जैसे उज्ज्वल, प्रतिभाशाली और सृजनशील विद्यार्थियों पर हमें गर्व है।

‘उन्मुक्त विचारों की उड़ान’ हमारे विद्यालय परिवार का वह सृजनात्मक मंच है, जहाँ आपकी कल्पनाएँ, विचार और प्रतिभाएँ खुले आकाश में पंख फैलाकर उड़ान भरती हैं। शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान देना नहीं, बल्कि आपको एक संवेदनशील, जिम्मेदार और जागरूक नागरिक बनाना भी है।

आज के समय में 'पर्यावरण संरक्षण' हमारी सबसे बड़ी जिम्मेदारी है। वृक्ष लगाना, जल बचाना, ऊर्जा का सदुपयोग करना और प्रदूषण कम करना,ये केवल आदतें नहीं, बल्कि हमारे भविष्य की सुरक्षा के संकल्प हैं।

साथ ही, अपने 'समाज और देश के प्रति कर्तव्यों' को हमेशा याद रखें। ईमानदारी, परिश्रम, अनुशासन और दूसरों के प्रति सम्मान–ये वे मूल्य हैं जो न केवल आपके जीवन को ऊँचाई देंगे, बल्कि राष्ट्र को भी प्रगति के पथ पर आगे बढ़ाएँगे ।

याद रखें–

सपनों को पंख देने के लिए परिश्रम, अनुशासन और सकारात्मक सोच ज़रूरी है। असफलता ठहराव नहीं, बल्कि सीख का अवसर है । हर नया दिन, नए अवसरों का द्वार है।

आइए, हम सभी मिलकर यह संकल्प लें कि आने वाले वर्षों में हम न केवल शिक्षा में, बल्कि 'पर्यावरण की रक्षा और समाज की सेवा' में भी अपनी मिसाल कायम करेंगे।

पत्रिका के द्वितीय संस्करण के लिए हिंदी विभाग का अभिनंदन है।

आप सभी के उज्ज्वल भविष्य, सृजनात्मक उड़ान और सार्थक जीवन की हार्दिक शुभकामनाओं के साथ–

स्नेह और आशीर्वाद सहित,

**सबीना साहिनी**
**प्रधानाचार्या**
**डी.पी.एस. बोपल**

# विभागाध्यक्षों की शुभकामनाएँ

**श्रीमती उमा माहेश्वरी**
**उप प्रधानाचार्या**

**श्रीमती नीना जानी**
**प्रभारी - माध्यमिक**

**श्रीमती समिंदर कौर गुलियानी**
**प्राथमिक शिक्षा प्रभारी**

**श्रीमती रुपल परीख**
**पूर्वप्राथमिक शिक्षा प्रभारी**

**श्रीमान् कुशल सोलंकी**
**प्रभारी - क्रियाकलाप विभाग**

'हिंदी' हमारी भाषा ही नहीं बल्कि हमारी विरासत भी है। हिंदी के प्रति प्रेम एवं सम्मान छात्रों की इन सृजनात्मक शक्ति में दृष्टिगोचर है । हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर छात्रों के विचारों की उड़ान एवं उत्साह की हम सराहना करते हैं । आप सभी को हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ।

## हिंदी विभागाध्यक्षा की कलम से

मेरे प्यारे बच्चो !!!

आप ही हमारे देश का भविष्य और आशा हैं । कक्षा 1 से 12 तक की आपकी यात्रा सीखने, समझने और खुद को बेहतर बनाने का अवसर है । पढ़ाई को बोझ न मानें बल्कि इसे ज्ञान की रोशनी समझें । खेल, संगीत, चित्रकला और नये अनुभव भी आपकी शिक्षा का हिस्सा हैं । कठिनाई आने पर हार न मानें, बल्कि साहस से आगे बढ़ें । अनुशासन, मेहनत और ईमानदारी को जीवन का आधार बनाएँ। दूसरों के साथ दयालु और सहयोगी बनें। याद रखिए - अच्छा इंसान बनना सबसे बड़ी सफलता है । सपनों को साकार करने की शक्ति आप में है । आप वह पीढ़ी हैं जो तकनीक के साथ पैदा हुई है, जो बदलाव से डरती नहीं बल्कि उसे अपनाती है । आज का समय आपके लिए अवसरों से भरा हुआ है - बस ज़रूरत है सही दिशा में मेहनत और आत्मविश्वास की । खुद पर विश्वास रखें आपमें वह ताकत है जो दुनिया बदल सकती है । ज्ञान को केवल अंकों तक सीमित न रखें असली शिक्षा वह है जो सोच बदल दे, दृष्टिकोण विकसित करे और आपको एक बेहतर इंसान बनाए । संवेदनशील बनें - समाज, पर्यावरण और दूसरों के प्रति आपकी सोच ही आपकी पहचान बनेगी ।

स्वतंत्र सोचिए लेकिन मर्यादित रहिए - आज़ादी का मतलब यह नहीं कि अनुशासन भुला दिया जाए । सोचें, समझें और फिर निर्णय लें । तकनीक का उचित उपयोग करें परंतु उसके अधीन न हों - सोशल मीडिया आपको जो दिखाता है, वह हमेशा सच नहीं होता । हार से डरिए मत- असफलताएँ आपको मजबूत बनाती हैं । सीखने का मौका देती हैं । आपके हाथ में भविष्य की कुंजी है उसे सँभालिए, सीखिए और समाज के लिए एक प्रेरणा बनिए। शुभकामनाओं सहित ..........

**श्रीमती वीणा माथुर**
**हिंदी विभागाध्यक्षा**
**दिल्ली पब्लिक स्कूल बोपल, अहमदाबाद**

## हिंदी विभागाध्यक्षा (प्राथमिक) की कलम से

उन्मुक्त- विचारों की उड़ान, वर्तमान परिप्रेक्ष्य में छात्रों को अपनी राजभाषा से जोड़ने का ये सराहनीय प्रयास है। तकनीकी के इस विकसित दौर में छात्र अपनी भाषा में कुछ रचने का प्रयास करें, उन्हें ऐसी प्रेरणा देने का उत्तरदायित्व शिक्षक वर्ग पूर्ण कर रहा है। इस पत्रिका द्वारा छात्र अपनी क्रियात्मकता को एक नई उड़ान दे पाएँगे ऐसी शुभेच्छा।

**श्रीमती हेमलता राठौर**

## संपादिका की कलम से

उन्मुक्त 'विचारों की उड़ान' के द्वितीय संस्करण में आपका स्वागत है । इस बार भी बच्चों ने अपनी अच्छी सहभागिता दिखाई है तथा अपनी लेखनी के ज़रिए हम सबको बहुत प्रभावित किया है । विषय के चयन ने भी विविधता प्रदर्शित करते हुए बच्चों ने अपने मनोभावों को बड़ी ही सुंदरता के साथ प्रस्तुत किया है । मुझे आशा है कि इतनी कम उम्र में विकसित इस सृजनात्मक शक्ति के पंख लगाकर बच्चे अवश्य ही भविष्य में ऊँचा मुकाम हासिल करेंगे । पत्रिका के प्रकाशन के लिए हिंदी विभाग के सभी अध्यापक वृंद का सहृदय आभार व्यक्त करती हूँ । बिना सभी के सहयोग के यह कार्य उचित रूप से होना संभव नहीं था । सभी बच्चों को अनंत शुभकामनाएँ ।

**श्रीमती सौदामिनी पाठक**

## प्रस्तावना

दिल्ली पब्लिक स्कूल बोपल की ई-पत्रिका उन्मुक्त ‘विचारों की उड़ान’ के द्वितीय संस्करण में आप सभी का स्वागत है । यह पत्रिका विशेष रूप से बच्चों की सृजनात्मक शक्ति को विकसित करने के उद्देश्य से प्रकाशित की जाती है । जिसमें विद्यार्थी अपने मनोभावों को कहानी, कविता, लेख आदि के माध्यम से अभिव्यक्त कर सकें । इस पत्रिका का उद्देश्य बच्चों में हिंदी भाषा के प्रति प्रेम जागृत करना, विविध विषयों में अपनी जिज्ञासा वृद्धि करना तथा आत्मविश्वास का विकास करना भी है । यह पत्रिका विद्यार्थियों के व्यक्तित्व को निखारने में भी सहायक है । आशा है अपने उद्देश्यों को सिद्ध करते हुए यह पत्रिका बच्चों के विचारों को पंख देने के लिए उन्हें एक उचित मंच प्रदान करेगी।

**हिंदी दिवस की शुभकामनाएँ**

# इस अंक में......

| | |
|---|---|
| **१.** | **बाल कृतियाँ ( कक्षा- १ से ५)** |
| | ❖ कविताएँ |
| | ❖ कहानियाँ |
| **२.** | **किशोर मन के उद्गार (कक्षा ६ से १०)** |
| | ❖ कविताएँ |
| | ❖ कहानियाँ |
| | ❖ लेख |
| | ❖ यात्रा वृत्तांत |
| | ❖ पाठ आधारित चित्रकथा |
| **३.** | **शिक्षक सृजन** |
| | ❖ कविताएँ |
| | ❖ लेख |

# बाल कृतियाँ

# ( कक्षा- १ से ५)

## जल बचाओ कल बचाओ

जल है जीवन का आधार,
ईश्वर का है यह उपहार।
आओ समझें इसका मोल,
क्योंकि जल तो है अनमोल।
प्यासे इससे प्यास बुझाते,
गर्मी से सब राहत पाते।
जीव-जन्तु और हर इंसान
जल से मिलता सबको जीवनदान
जल की एक-एक बूँद बचाओ,
काम पड़ने पर काम में लाओ ।
आज अगर न बचाया जल
खतरे में आजाएगा कल ॥

**मिशिता राज चौधरी**
**1-H**

## मेरी मम्मी

मेरी मम्मी सबसे प्यारी,
बातें उसकी न्यारी-न्यारी।
अच्छे - अच्छे पाठ पढ़ातीं,
अच्छी आदत हमें सिखातीं।
रोज़ कहानी नई सुनातीं,
परी लोक की सैर करातीं ।

प्यार से खाना हमें खिलातीं,
अपनी गोद में हमें सुलातीं।
घर की बगिया के हम फुलवारी,
पापा - मम्मी के हम दुलारी।
माँ की आँखों के तारे हम,
घर के राज दुलारे हम ।

**अदिति राज**
**1-E**

## मेरा परिवार

परिवार होता है सुखी, दयालु,
हर सदस्य रखता है एक-दूसरे का ख़्याल।
परिवार होता है प्यारा-सा,
जिसमें होता है कुछ खास सा।
माताजी, पिताजी, दादाजी और दादीजी,
सब मेरा ख़्याल रखते हैं,
और मैं भी उनका ध्यान रखता हूँ।
हम सब एक-दूसरे से बहुत प्यार करते हैं।

मैं अपने परिवार से बहुत प्रेम करता हूँ,
और वो भी मुझे खूब सारा प्यार देते हैं।
हमारा परिवार हर किसी की मदद करता है –
चाहे वह हिन्दू हो, मुस्लिम, जैन या कोई और।
सच्चे परिवार में होता है अपनापन,
जहाँ सब साथ रहते हैं,
सुख-दुख में साथ निभाते हैं।
यही होता है असली परिवार।

**शिवाय शुक्ला**

**2-G**

## पेड़ लगाओ

पेड़ लगाओ, पेड़ लगाओ,
हरा-भरा माहौल बनाओ|
फल, छाया ये हमको देते,
बदले में कुछ भी न लेते|
बाढ़ से हमको बचाते हैं,
प्रदूषण का डर हटाते हैं ।

**हिमाया दवे**

**2-D**

## हमारे पड़ोसी के पंछी

हमारे सोसाइटी में जोसेफ अंकल रहते हैं। उन्होंने उनके घर पर पंछियों के लिए सुरक्षित जगह बनाई है। उनके पास अनेक प्रकार के छोटे बड़े रंग-बिरंगे पक्षी हैं।

उन्होंने छोटे-बड़े गमले रखे हैं, जिसमें पंछी अपना घर बनाकर रहते हैं। जब मैं उधर जाता हूँ, मुझे ऐसा लगता है, मानो मैं किसी गुफा में आ गया हूँ! जब छोटे-छोटे पंछी मेरे हाथों पर और सिर पर बैठते हैं, तब मुझे गुदगुदी होती है और बहुत मज़ा आता है।

उनके पास चार तोते हैं, उनमें से एक मेरा सखा है। मैं उसे खाना खिलाता हूँ और वह मुझसे बातें भी करता है।

इस कहानी से हमें सीख मिलती है कि अगर हम पशु-पक्षियों को प्रेम देंगे तो वे भी हमें प्यार देते हैं।

**जय समीर अष्टीकर**

**2-C**

## बादल

काले काले काले बादल
आसमान में रहते हैं ।
कभी सफ़ेद कभी काले
गड़-गड़-गड़ गरजते हैं ।
जब भी वे बरसते हैं
छम-छम बारिश आती है ।
हरियाली छा जाती है
सबके मन को भाती है ।

**वैदेही ध्यानी**

**2-C**

## बच्चे मन के सच्चे

हम बच्चे हैं, मन के सच्चे,
बोल मेरे कच्चे - पक्के,
लोगों को लगते हैं अच्छे।
हम सपनों की दुनिया में रहते,
खेलते - कूदते मस्ती करते,
फिर भी हम कभी न थकते।

आपस में हम मिलकर रहते,
मुश्किलों से हम न डरते,
हिम्मत से हम आगे बढ़ते।
हम से रहती घर की शान,
बनेंगे हम भारत की पहचान ,
जैसे गाँधी, नेहरू और कलाम।

**अभिनव राज**

**2-E**

## सूरज का विवाह

गर्मी का दिन था। पृथ्वी पर अचानक लोगों ने खबर सुनी कि सूरज का जल्द ही विवाह होने वाला है। सारे लोग बहुत प्रसन्न हुए। मेंढक भी बहुत प्रसन्न हुए और पानी में उछल-कूद मचाने लगे। एक बूढ़ा मेंढक पानी के ऊपर आया और सारे मेंढकों को समझाने लगा कि यह प्रसन्नता की नहीं दुख की बात है, "मेरे साथियो सुनो ! तुम लोग इतने प्रसन्न क्यों हो रहे हो? क्या यह वाकई खुशी मनाने की खबर है? एक अकेला सूरज तो अपनी गर्मी से हमें झुलसा देता है। ज़रा सोचो, जब इस सूरज के दर्जन भर बच्चे हो जाएँगे तो हमारा क्या हाल होगा ? हमारा कष्ट कई गुना बढ़ जाएगा और हम लोग जीवित नहीं रह पाएँगे।

**आरुष रावल**

**3-C**

## पेड़ देते हमें जीवन

न काटो पेड़ों को ये देते हमें जीने का सहारा,
दिखता है इनसे सुंदर संसार हमारा ।
बचाते पेड़ पृथ्वी को हर बार,
इनको भी है प्यार और स्नेह का अधिकार ।
पेड़ देते हमें मीठे - मीठे फल,
इनसे सँवर जाता हमारा कल ।
आओ इन्हें हम धरती पर सजाएँ,
पेड़ हमें धूप और गर्मी से बचाएँ ।
पेड़ हमारे जीवन को अनमोल बनाते,
जो खुद जलते पर हमको उजाला दिखाते |
ये हमारे पर्यावरण को प्रदूषित होने से बचाएँ,
पेड़ हमारी धरती को स्वर्ग बनाएँ |
आओ हर रोज़ एक पेड़ लगाएँ,
इनको हम अपना मित्र बनाए|

**अनिका कटियार**

**3-C**

## प्यारी वर्णमाला

‘अ’ अनार के सुंदर दाने,
‘आ’ आम का पीला रंग,
‘इ’ इमली से बनी खटाई,
‘ई’ ईख से बनी मिठाई,
‘उ’ उल्लू को देखो भाई,
‘ऊ’ ऊन से बुनो रजाई,

‘ए’ एड़ी से चलते जाओ,
‘ऐ’ ऐनक को पहनो भाई,
‘ओ’ ओखली से करो कुटाई,
‘औ’ औजार से बचो बचाओ,
‘अं’ अंगूर को खाते जाओ,
‘अः’ को खाली रखो भाई|

**अप्रतिम सिंह**

**3-D**

# चतुर बाज

गर्मियों के दिन थे। सूरज बहुत देर तक आसमान में चमकता था। एक दिन की बात है। सूरज अपने रोज़ाना समय से कुछ ज़्यादा ही ज़ल्दी डूब गया। यही सिलसिला रोज़ चलने लगा। सूरज देरी से आता था और ज़ल्दी से डूब जाता था। जंगल में सारे पशु एवं पंछियों को यह रहस्यमय घटना से कौतूहल हुआ। उन्होंने जंगल के सबसे चतुर पक्षी बंटी, जो एक बाज़ था उसे बुलाया और सारी जानकारी बताई। सबने चिंता जताई कि अगर यही चलता रहा तो पृथ्वी पर बहुत ही बड़ा संकट आ सकता है, बारिश और समस्त जनजीवन पर असर हो सकता है। तभी बंटी ने बोला कि दोस्तों आप चिंता मत करो, मैं अभी जाकर खबर लाता हूँ कि ऐसा क्यों हो रहा है? बंटी ज़ल्दी से उड़ा और मीलों तक उड़ता रहा। उसने रास्ते में कुछ लोगों को बात करते सुना कि फ़िनलैंड के एक

वैज्ञानिक ने कोई रिमोट खोजा है, जिससे वह सूरज को कन्ट्रोल कर रहा है। बंटी तुरंत ही फ़िनलैंड की ओर उड़ा। उसने लोगों की बात सुनकर उस वैज्ञानिक का पता लगा लिया। वह रात को उस प्रयोगशाला की छत पर गया। उसने देखा कि वह रिमोट बहुत ही सुरक्षा से पासवर्ड वाले काँच के बॉक्स में रखा था। उसको समझ आ गया कि अगर रिमोट को नाकाम करना है, तो जब वैज्ञानिक उसे बाहर निकालेगा तभी हो पाएगा। वह रातभर वैज्ञानिक का इंतज़ार करता रहा। सुबह 5 बजते ही वैज्ञानिक अपना रिमोट बाहर निकालने लगा, क्योंकि उसे सूरज को उगने में देरी करानी थी। बंटी ने मौका देखकर अपनी पूरी गति से उड़ान भरी और रिमोट को ज़मीन पर पटक कर तोड़ दिया। उसने वैज्ञानिक को भी समझाया कि विज्ञान सबके भले के लिए इस्तेमाल करें न कि पर्यावरण

को हानि पहुँचाने के लिए। वैज्ञानिक बंटी से डर गया और उसकी बात भी समझ गया। इस तरह सूरज फिर से निर्धारित समय पर उदय-अस्त होना शुरू कर दिया।

शिक्षा : हमें विज्ञान का उपयोग सिर्फ़ मनुष्य ओर पर्यावरण की बेहतरी के लिए करना चाहिए।

**अव्यान डी पटेल**

**3-C**

# ये पापा कहाँ से आते हैं ?

वो पापा थे जो खिलौने लाते थे,
वो पापा थे जो हमें स्कूल में पढ़ाते थे।
वो पापा थे जो घुमाने ले जाते थे,
वो पापा थे जो ढेर सारा पैसा कमाते थे।
वो पापा ही थे जो महँगी ड्रेस दिलाते थे,
पर जाने क्यों त्योहार पर पुराने कुर्ते में नज़र आते थे?
वो पापा थे जिसने मन की हर बात मानी थी,
मुझे और मेरी बहन को बस हँसाने की ठानी थी।
मेरे बर्थडे पर गोल्ड का कुछ देते थे,
पर न जाने क्यों अपने जन्मदिन पर कुछ भी नहीं लेते थे।
उन पापा की आदतें आज भी वैसी ही हैं,
बस मेरे लिए खिलौनों की जगह किताबें खरीदी हैं।
आज पापा हमको प्लेन में यात्रा करवाते हैं,
पर जाने क्यों बस लेते हैं जब अकेले जाते हैं।
पापा नसीहत देते हैं कि ख़र्च कम करो, सेविंग होती है,
पर फिर भी उनको हर वीकेंड पर बाहर की क्रेविंग होती है।
आज हैप्पी वाला बर्थडे पापा, कुछ ऐसे मनाते हैं,
कल तक दीदी की ज़िद मानते थे, अब मुझ से केक कटवाते हैं।
माँ का तो पता है जिसकी बदौलत दुनिया में लाए जाते हैं,
पर हमारे लिए संघर्ष करने को, ये पापा कहाँ से आते हैं?

**श्रव्या शर्मा**
**3-D**

# कभी हार नहीं होती

मेहनत करनेवालों की कभी हार नहीं होती,
मेहनत करते - करते कभी हार मत मानो,
हार मान गए तो इंसान नहीं ।
मेहनत करके जोश में रहो,
मेहनत की मंज़िल से नीचे मत गिरो,
मंज़िल से नीचे गए तो इंसान नहीं ।
मेहनत करके सफलता की राह पर रहो,
मेहनत करके देश का नाम रोशन करो,
देश का नाम बदनाम किया तो इंसान नहीं ।
मेहनत करके भारतमाता की तरह शूरवीर बनो,
मेहनत करके अच्छे नागरिक बनो,
अच्छे नागरिक नहीं बने तो सच्चे इंसान नहीं ।

**दर्शन ठक्कर**
**3 F**

# एक छोटा-सा सपना

मैं हूँ छोटा-सा लड़का,
पर दिल में है सपना बड़ा।
उड़ना है, आसमानों में,
बनना मुझे तारा है।
कभी बनूँ मैं पायलट साहब,
कभी बन जाऊँ सुपर हीरो।
कभी सोचा टीचर बनूँ,
बनाऊँ सबको ज़ीरो से हीरो।
खेल के मैदान में दौड़ूँ,
हर रेस में सबसे आगे।
पर जब हारूँ,हँस दूँ फिर,
फिर से दौड़ लगाऊँ आगे।
दादी कहती – "सपने देखो",
पर सच भी बनाना सीखो।
दिल से जो भी चाहो बेटा,
मेहनत से वो पाना सीखो।
मैं भी सोच रहा हूँ यारो,
जो भी बनूँ कल को मैं,
दिल बड़ा हो,प्यार भरा हो,
और अच्छा इंसान बनूँ मैं।

**लक्ष्य ढींगरा 3 F**

## हमारे जीवन दाता

पेड़ हमारे जीवन दाता,
हमको जीवन देते हैं ।
छाया हमको देकर
वे मीठे फल भी देते हैं ।
दवा का काम करते हैं ।
फिर हवा भी हमको देते हैं ।
पेड़ हमारे जीवन दाता हमको जीवन देते हैं ।
पशुओं का आहार बने
घाव हमारे भरते हैं ।
सुन्दर-सुन्दर वस्त्र हमारे
घर की रौनक बनते हैं ।
पेड़ हमारे जीवन दाता,
हमको जीवन देते हैं ।
बाग-बगीचा सुन्दर इनसे
जंगल भी लहराते हैं
घर में छत का काम करे वे
प्राणवायु भी हमको देते हैं ।
पेड़ हमारे जीवन दाता
हमको जीवन देते हैं ।

**शिविका शर्मा**

**3-H**

## मेरा भाई

मेरा भाई तू मेरी जान है
इस घर की इकलौती शान है
जब से तू है आया
घर में अलग- सा रौनक छाया।
'माँ' की आँखों का तारा है तू
'पापा' का राज दुलारा है तू,
हम सब के दिलों में राज करता
मेरा प्यारा भाई है तू ।
जितना वह मुझसे लड़ता है
उतना ही प्यार दिखता है,
चेहरे पर देख कर उलझन
वह झट से दूर भगाता है।
उम्र भले ही छोटी है मुझसे
पर बातें करता सयानी है,
हर घटना को ऐसे बताता
जैसे कोई कहानी है।

**आस्था सिंह**

**4-B**

## अच्छाई का सपना

बड़ा आदमी नहीं बनना मुझे,
बस अच्छा इंसान बनना है।
किसी के आँसू पोंछ सकूँ,
ऐसा एक दिल रखना है।
नाम हो न हो अख़बारों में,
दिल में सबके रह जाऊँ,
कभी किसी का हाथ थाम लूँ,
कभी किसी के संग गा लूँ।
झूठ से मैं दूर रहूँ,
सच का दामन थामूँ,

हर काम ईमानदारी से करूँ,
कभी न किसी से हारूँ।
पेड़ों को भी पानी दूँ,
पंछियों को दाना डालूँ,
धरती को माँ मानकर,
हर रोज़ दुआ में गाऊँ।
यही है मेरा सपना प्यारा,
बचपन से दिल में पाला है,
माँ कहती हैं- नेक बन जाओ,
उसने सच में कुछ कर डाला है।

**अयांश प्रियदर्शी**

**4-I**

## रूस और भारत में मेरा जीवन

मेरा जन्म 2016 में इंदौर में हुआ था। मेरा परिवार अंतर्राष्ट्रीय है : मेरे पिता भारतीय हैं और मेरी माँ रूसी हैं। इसलिए मैं रूस और भारत में रहा। मैं आपको अपने देशों के लोगों के जीवन में आए अंतर के बारे में बताना चाहता हूँ। भारत में जलवायु आरामदायक और गर्म है। मेरी माँ आर्कटिक क्षेत्र, याकूतिया से हैं। वहाँ हमेशा ठंड रहती है। सर्दियों में तापमान 50 डिग्री तक गिर जाता है। रूस में लगभग सभी परिवारों के पास एक बिल्ली होती है। मेरी माँ के माता-पिता के पास भी एक बिल्ली थी, मैरीसिया। वह मेरी सबसे पसंदीदा पालतू जानवर है।

भारत में मसाले तो बहुत होते हैं और मौसमी सब्ज़ियाँ भी। रूस में लोग चाय और कॉफ़ी के बहुत शौकीन हैं और अक्सर इन्हें पानी की तरह बिना दूध और चीनी के पीते हैं। भारत में मुख्य अवकाश दीपावली है और रूस में नव वर्ष। रूढ़िवादी चर्च कैलेंडर के अनुसार  रूस में क्रिसमस 7 जनवरी को मनाया जाता है। रूस और भारत मित्र हैं।

**गरविल जोशी**

**4-E**

## मन के भोले-भोले बादल

झब्बर-झब्बर बालों वाले
गुब्बारे से गालों वाले
लगे दौड़ने आसमान में
झूम-झूम कर काले बादल
कुछ जोकर-से तोंद फुलाए
कुछ हाथी-से सूँड उठाए
कुछ ऊँटों-से कूबड वाले
कुछ परियों-से पंख लगाए

आपस में टकराते रह-रह
शेरों से मतवाले बादल
कुछ तो लगते हैं तूफ़ानी
कुछ रह-रह करते शैतानी
कुछ अपने थैलों से चुपके
झर-झर-झर बरसाते पानी
नहीं किसी की सुनते कुछ भी
ढोलक-ढोल बजाते बादल।

**मिराया पटेल**

**4-A**

## आओ देखें अपना देश

सुंदर और अच्छा,
देश हमारा है सच्चा।
खुली हवा है चलती,
प्रकृति है चमकती।
स्वच्छ देश है हमारा,
खिड़की से यह देखो नज़ारा।
खुले खेत और हरियाली,

मन में भर दे खुशहाली।
भारत है स्वतंत्र,
तिरंगा है हमारी शान।
एकता और शक्ति से,
भारत है महान।
जय हिन्द।

**धीमही मेहता**

**5-K**

# मन

नीले नभ में उड़, पंछी बन मन, स्वच्छंद विशाल डैनों वाला ।

यूँ अंतर में खो जाने से, नहीं मिटता हिय का छाला ॥
दूर कहीं पर जहाँ कहीं, धरती नभ से मिलती होगी ।
कोई ऐसी राह, जो मंज़िल तक साथ चलती होगी ॥
सोच मत उस पथ पर मन, बन पहिया चलता जा ।
छोड़ पुराने वस्त्र यहीं, नव नूतन धर चलता जा ॥
अभी बहुतेरी निशा पड़ी, कलुषित आँखें बड़ी-बड़ी।
पर उसके आगे श्वेत सुबह, निहार रही खड़ी-खड़ी ॥
हर अपने अंतर का ज्वर, बन ज्वार बढ़ता जा ।
सौ मुश्किलें होंगी पथ में तेरे, मत कर भय लड़ता जा ॥
धरती नहीं न सही,सोच आसमान मेरा है ।
जहाँ-जहाँ तक फैला ये, वो साम्राज्य मेरा है ॥
आदर्श बन नई पीढ़ी के वास्ते, तू समंदर से निकाल रास्ते ।
पी जा जो हाथ में आए, अमृत या विष का प्याला ॥
नीले नभ में उड़, पंछी बन मन, स्वच्छंद विशाल डैनों वाला ।

**धैर्य शर्मा**

**5-B**

## वर्षा ऋतु

वर्षा आए, वर्षा आए,
खुशियाँ लाए, खुशियाँ लाए।
बारिश करती झम-झम-झम,
बादल गरजते धम-धम-धम।
वर्षा में नाचते मोर ही मोर,
गली में गूँजे शोर ही शोर।
छप-छप करती नन्हीं धारें,
भीग गए सब बच्चे सारे।
प्रसन्न होता है सबका मन,
चमक उठता है सारा उपवन।

पत्तों पर मोती जैसे पानी,
इन्द्रधनुष ने ली मुस्कान।
गाँव में गूँजे बाँसुरी तान,
किसानों के खिल उठे अरमान।
कागज़ की नावें, छोटी-सी धारा,
खेल-खिलौनों से भरा नज़ारा।
गलियों में बहती नई लहरें,
सारे बच्चों को खूब नहलाएँ।
वर्षा रानी, रहो यूँ ही प्यारी,
तुमसे सजती धरती हमारी।

**दिशी वोरा 5 H**

## मेरा देश

भारत देश है सबसे प्यारा,
सबसे सुन्दर देश हमारा ।
हरे-भरे खेत लहलहाते,
सबके मन को यह बहलाते ।
इसके उत्तर मैं है, पर्वत विशाल,
दक्षिण में है सागर विकराल ।

पूरब में है सूरज की लाली,
पश्चिम में है भूमि रेतीली ।
शूरवीरों की धरती है ये,
हमको इस पर मान है।
गंगा यमुना तापी जैसी
नदियाँ, देश की शान है ।

**किशा जैन 5-K**

# बहादुर दोस्त

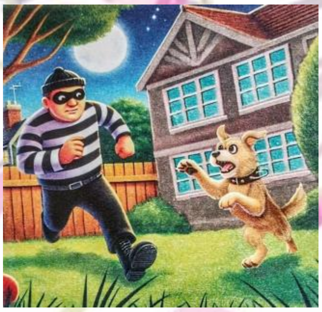

इशू का जन्मदिन आनेवाला था और उसके पापा ने उसके लिए एक खास उपहार सोचा था। जब जन्मदिन का दिन आया, तो पापा इशू के लिए एक प्यारा-सा कुत्ते का बच्चा लाए जिसे देखकर इशू की खुशी का ठिकाना नहीं रहा ! उसने उस गोल-मटोल, मुलायम बाल वाले छोटे से दोस्त को प्यार से उठा लिया और उसका नाम ' लालू ' रख दिया।

लालू बहुत ही प्यारा और समझदार था। वह जल्दी ही इशू का सबसे अच्छा दोस्त बन गया। दोनों हर दिन एक साथ खेलते, दौड़ते और मस्ती करते। समय के साथ-साथ लालू बड़ा हो गया और घर का सबसे वफ़ादार सदस्य बन गया। एक रात सब गहरी नींद में सो रहे थे। इसी बीच लालू ने एक आवाज़ सुनी ' खट-खट ', वह चौकन्ना हो गया। उसके कान खड़े हो गए। उसे कुछ हलचल-सी महसूस हुई। उसने चारों ओर छानबीन की, तो देखा कि एक बदमाश घर में घुसने की कोशिश कर रहा था। लालू ज़ोर-ज़ोर से ' भों-भों ' भौंकने लगा, जैसे कह रहा हो, ' रुक जाओ, यह मेरा घर है !' बदमाश ने सोचा, "अगर यह कुत्ता भौंकता रहा, तो घर वाले जाग जाएँगे। मुझे इसे चुप कराना पड़ेगा।" बदमाश ने लालू पर हमला कर दिया, जिससे लालू के पैर में गहरी चोट लग गई। लेकिन लालू तो बहादुर था। उसने हार नहीं मानी। वह ज़ख्मी हालत में भी बदमाश पर ज़ोर-से झपट पड़ा। लालू उससे मुकाबला करता रहा। लालू के लगातार भौंकने से घर वाले जाग गए, जिन्हें देखकर बदमाश डरकर भाग गया। लालू ने अपनी बहादुरी से घर की रक्षा की। इशू के पापा ने लालू की मरहमपट्टी की। इशू ने लालू को शाबाशी देते हुए कहा, " लालू, तुम तो हीरो हो! मेरे बहादुर दोस्त हो!" इस तरह लालू ने अपनी बहादुरी से सबका दिल जीत लिया।

अब लालू पूरे घर का हीरो बन गया था। इशू को गर्व था कि उसके पास इतना बहादुर और वफ़ादार दोस्त है ।

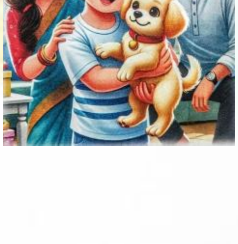

**जनार्दन राज्यगुरु 5 B**

## हमारी हिंदी की शिक्षिका

हमारी हिंदी की शिक्षिका,
कितनी अच्छी हैं।
हमेशा मुस्कुराती रहतीं,
हमसे ज्ञान की बातें करती हैं।
बहुत प्यार से पढ़ाती हैं,
आत्मविश्वास बढ़ाती हैं।
शब्दों का सही उच्चारण करना,
हरदम हमें सिखाती हैं।

व्याकरण व पाठों का भाव,
खेल-खेल में समझाती हैं।
ढेर सारा अभ्यास करातीं,
भाषा का ज्ञान बढ़ाती हैं।
सही हिंदी बोलें हम,
यही उनकी चाह है।
राजभाषा का मान बढ़े,
वही सपना दिखलाती हैं।

**माहिर कृपेश पटेल**
**5-C**

## कौन-सी ऋतु आई

अहा! ये कौन-सी ऋतु आई ?
नभ से बरसी शीतल बूँदें
कुहू-कुहू बोले कोयल
पीहू-पीहू बोले मोर।
पंख फैलाए नाचे मोर मचाए शोर
नए-नए कीट पतंगे तितली फड़फड़ाई।
उमंग से मन नाच रहा शीतलता छाई।
सब कहे ये तो मौसम है,
वर्षा ऋतु आई।।
अहा! ये वर्षा ऋतु आई।।

**ओम कोयानी**
**5-H**

# छोटा अंकुर

मैंने अपने घर के बगीचे में एक छोटा सा अंकुर लगाया और मैंने इसकी देखभाल की। मैंने इसे हर दिन पानी दिया और इसके विकास को देखा। धीरे-धीरे यह बढ़ने लगा। मैंने इसका नाम "आशा" रखा। जैसे ही यह बढ़ा, मैंने धैर्य, मेहनत और जिम्मेदारी के बारे में सीखा। एक दिन, मेरे स्कूल ने एक बागवानी प्रतियोगिता आयोजित की और मैंने अपने अंकुर के साथ इसमें भाग लेने का फैसला किया। मैंने इसे सुंदर बनाने के लिए कड़ी मेहनत की। जब जज आए, तो वे मेरे अंकुर से बहुत प्रभावित हुए और मैंने पहला पुरस्कार जीता!

मैंने महसूस किया कि जैसे मेरा अंकुर, हमारे सपने और लक्ष्य भी देखभाल, धैर्य और मेहनत से बढ़ सकते हैं। मुझे अपनी उपलब्धि पर गर्व है और मैं अपने सपनों को पोषित करता रहूँगा। सीख- देखभाल, धैर्य और मेहनत से हमारे सपने बढ़ सकते हैं और फल सकते हैं।

**निर्वाना विधात्री धर्मन**
**5 B**

# दु:ख का समय

दुःख का समय
जब मैं परेशान हो जाता हूँ
खुद से, उलझा रहता हूँ
खुद के भीतर तब दुनिया मुझे,
बहुत खूबसूरत लगती है।
उसके पास ज़िंदगी लगती है
जिसकी मुझे प्यास लगती है

मैं सबसे बेकार लगता हूँ
जब मैं उदास हो जाता हूँ।
दुनिया में निश्चितता दिखाई देती है
जिसे मैं छूता हूँ , ऐसा लगता है
वह अंतर्द्वंद्व में ठहरा रहता है
खुद के भीतर से
मिलता नहीं सुकून
जो बाहरी दुनिया में
दिखता है !!!

**समंविता त्रिपाठी 5-H**

# किशोर मन के उद्गार

# ( कक्षा-६ से १० )

# प्रकृति का सौंदर्य

पेड़ों की छाँव,
शीतल हवा है।
पहाड़ों की ऊँचाई,
अनोखी कथा है।
नदियों का कलकल,
धुन सुनाता है।

फूलों का रंग,
मन को भाता है।
पंछी का गीत,
सुबह जगाता है।
सूरज का ताप,
दिन चमकाता है।

**आर्वी डोबारिआ**

**6-I**

# मुझे क्या बनना है?

बड़ा होकर मुझे क्या बनना है?
यह मेरी सबसे बड़ी उलझन है।
कभी सोचता हूँ, एक फुटबॉलर बन जाऊँ,
रोनाल्डो के सारे रिकॉर्ड अपने नाम कर लूँ।
इसलिए फुटबॉल अकादमी ज्वाइन कर लिया,
लेकिन मुझसे कुछ न हो पाया।
फिर मैंने अपनी माँ से पूछा -

"माँ मुझे क्या बनना है?"
उन्होंने कहा- जो इच्छा कर ले,
पहले अपनी पढ़ाई देख ले।
दुनिया में कुछ भी बनना है आसान,
लेकिन मुश्किल है बनना एक अच्छा इंसान।
हमारे लिए बस यही कर दे,
बाकी सब भगवान पे छोड़ दे।

**अंश काबी**

**6-K**

# वंदे भारत की यात्रा : एक मज़ेदार दिन

एक थका देने वाले दिन के बाद, मुझे ट्रेन के लिए तैयार होना था। समय था शाम 6:00 बजे, और मैं वंदे भारत ट्रेन से सफ़र कर रही थी। मैंने इसके बारे में एक ब्लॉग बनाया, जो काफ़ी मज़ेदार था। जब मैं अपनी खिड़की वाली सीट पर बैठी, तो मुझे बहुत अच्छा लगा। ट्रेन की स्पीड काफ़ी तेज़ थी फिर भी मैं अपने  पापा-मम्मी के साथ बहुत आराम महसूस कर रही थी।

थोड़ी देर बाद, हम सबने मिलकर एक फ़िल्म देखी। मैंने सोचा कि ट्रेन में ही घूम लूँ तभी ट्रेन एक स्टेशन पर रुक गई  इसलिए मैं अपनी सीट पर ही बैठी रही। मेरे मम्मी और पापा थोड़ी देर के लिए सो गए थे तब मैंने द्वारका के बारे में कुछ रोचक बातें पढ़ने का फ़ैसला किया। मैं खिड़की से बाहर देख रही थी। रात हुई और हमने डिनर किया । जब आइसक्रीम वाला आया तब मैंने और पापा ने खुशी-खुशी आइसक्रीम खाई, लेकिन मम्मी ने कहा, "नहीं, मुझे वनीला आइसक्रीम नहीं चाहिए!" फिर मैं सो गई, और लगभग रात 11:30 बजे हम द्वारका पहुँचे।

रेलवे स्टेशन बहुत छोटा था, सिर्फ दो प्लेटफार्म और एक ओवरब्रिज था। हमारी टैक्सी बाहर हमारे इंतज़ार में थी। हम 12:10 तक होटल पहुँचे । होटल उतना अच्छा नहीं था लेकिन बहुत महँगा था। थोड़ी देर बाद हम सब सो गए। अगले दिन जब मैं उठी तो यह पता चला कि आज तो द्वारका मंदिर जाने का दिन है। मैंने जल्दी से आरामदायक कपड़े पहने और मम्मी-पापा के साथ ऑटो रिक्शा लिया। लेकिन हमें काफ़ी देर हो गई थी।

जब हम मंदिर पहुँचे तो वहाँ बहुत भीड़ थी। हम अपने जूते भी सही जगह पर नहीं रख सके । भीड़ इतनी ज्यादा थी कि हमें अंदर जाने के लिए जगह भी नहीं मिल रही थी। जब हमारी बारी आई तो मैं एकदम घबरा गई लेकिन मैंने मम्मी का हाथ थाम लिया इसलिए सब ठीक रहा। मंदिर में हर 15 मिनट में भोग का समय होता था। पापा पुरुषों की लाइन में थे और हमने पहले से ही मिलने की एक जगह तय की थी। जब हम मंदिर के अंदर गए तब हमने भगवान कृष्ण जी के दर्शन किए उनकी मूर्ति बहुत सुंदर थी। मंदिर की डिज़ाइन भी कमाल की थी ! दर्शन करने के बाद बाहर आकर हम थोड़ा इंतज़ार करते रहे क्योंकि हमें लगा कि पापा अभी-भी मंदिर में ही हैं पर जब हम मिलन स्थल पर पहुँचे, तो पापा ने कहा कि वह 20 मिनट से वहाँ इंतज़ार कर रहे थे। यह सुनकर मुझे बहुत हैरानी हुई!

हमने अपने जूते और सामान लिए और फिर ऑटो से होटल की ओर चले। होटल जाकर हमने अपने बैग पैक किए और सोमनाथ जाने के लिए कार का इंतज़ार करने लगे। हमेशा की तरह कार आने में भी देर हुई। आखिरकार जब कार आई, तो हम उसमें बैठ गए। आधे घंटे बाद, हमने पेट्रोल पंप पर रुककर तेल भरवाया।

और फिर हमारी आगे की यात्रा शुरू हुई । हम समुद्र के पास थे और सूरज की तेज़ रोशनी से परेशान थे। मुझे एक आइडिया आया; मैंने अपने शॉल को खिड़की में दबा दिया ताकि सूरज की रोशनी कम हो जाए। अब किरणें अधिक सहनीय लग रही थीं।

मैंने सुधा मूर्ति की किताब निकाली और पढ़ना शुरू किया। मैंने पहले ही उसका आधा हिस्सा पढ़ लिया था इसलिए मैंने उसे जल्दी पढ़कर खत्म कर दिया। जब हम होटल में चेक-इन करने पहुँचे तो वह होटल बहुत अच्छा था। पिछला होटल तो कुछ खास नहीं था लेकिन यह होटल तो लाजवाब था। मम्मी ने मुझे एक ट्रिक बताई कि किसी जगह के बारे में कैसे पता करें कि वह अच्छी है या नहीं। उन्होंने बताया कि अगर वहाँ की सुगंध अच्छी हो, तो वह जगह भी अच्छी होगी।

फिर हम बाहर आए और एक कैब लेकर सोमनाथ मंदिर गए। मंदिर बहुत बड़ा था और वहाँ की सुविधाएँ द्वारका मंदिर से बेहतर थीं। हम गाते हुए अंदर गए और आशीर्वाद लिया। सब कुछ शांति से हुआ। मैंने एक लेज़र लाइट खरीदी और ऑटो से वापस होटल आ गए। वहाँ हमारा डिनर हुआ फिर थोड़ी टीवी देखी और सो गए।

अगली सुबह, हमने जल्दी उठकर होटल से चेक-आउट कर लिया । फिर हम कार में बैठकर उस जगह जाने के लिए निकले, जहाँ भगवान कृष्ण जी को तीर लगा था। अंत में हम 2 घंटे में एयरपोर्ट पहुँच गए वहाँ पहुँचकर हमने थोड़ी मस्ती की।

मैं बहुत भूखी थी लेकिन एयरपोर्ट पर खाने के लिए बहुत कम था। बस एक रूम और वॉशरूम था। वहाँ कई विदेशी लोग थे क्योंकि यह दियू एयरपोर्ट था। आखिरकार हम फ्लाइट में बैठे और अहमदाबाद में लैंड कर गए।

इस तरह मैंने अपनी एक यात्रा पूर्ण की- द्वारका और सोमनाथ जैसे धार्मिक स्थानों की।

यह थी मेरी द्वारका और सोमनाथ की रोचक यात्रा । हर पल में रोमांच था, और हर ठहराव में एक नई कहानी थी।

**अमायरा चौधरी**

**6-C**

# होमवर्क

होमवर्क आया फिर से भारी,
कितनी कॉपी, कितनी तैयारी!
गणित के सवाल, हिंदी की लेखनी,
अंग्रेज़ी में शब्दों की सेना चली।
टीचर बोलीं - "कल काम पूरा लाना"
मम्मी बोलीं - "अब देर न करना !"
पापा बोले - "पहले खेलो थोड़ा"
फिर बोले - "अब पढ़ो ज़रा और गहरा ।"
सोचा था जल्दी कर लेंगे काम ,
पर टीवी ने मन को हर लिया।
अब रात के दस बजे हैं भाई,
नींद और होमवर्क की लड़ाई!
कल से वादा - पहले पढ़ाई,

फिर खेल, फिर मस्ती की बारी।
होमवर्क से दोस्ती कर लेंगे,
हर दिन थोड़ा-थोड़ा कर लेंगे।

**ध्याना दवे**

**6-G**

# कालूसिंह का परिवर्तन

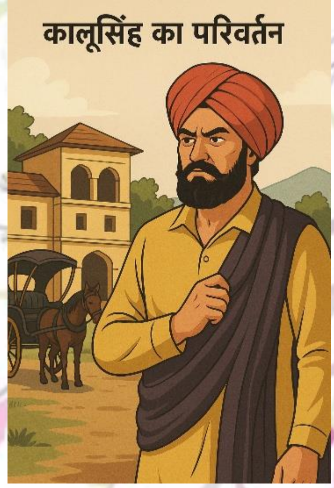


यह कहानी पंजाब के गुरदासपुर जिले के एक छोटे से गाँव की है, जहाँ एक अमीर मगर घमंडी ज़मींदार कालूसिंह रहा करता था। उसके पास धन, जमीन, नौकर-चाकर, घोड़े-बग्घी–सब कुछ था। मगर उसका दिल गरीब था।

कालूसिंह अत्यंत कंजूस था। वह कभी किसी की मदद नहीं करता था, न गरीब मज़दूरों की, न गाँव की विधवाओं की। उसके लिए धन ही भगवान था। वह अक्सर कहता,

"मैंने सब कुछ अपनी मेहनत से कमाया है, किसी को भीख नहीं दूँगा!"

लेकिन उसकी कमाई का बड़ा हिस्सा जुए, शराब और दिखावे में बर्बाद हो जाता। उसने एक बार एक दरिद्र साधु को दरवाज़े से धक्के मार कर निकाल दिया था, जो भोजन माँगने आया था।

परिवर्तन की शुरुआत : पतन का समय

समय के साथ जुए की लत ने उसका सब कुछ छीन लिया। एक रात वह बड़ा दाँव हार गया–घर, ज़मीन, दौलत... सब कुछ चला गया।

कल तक जो ज़मींदार था, अब भिखारी बन चुका था।

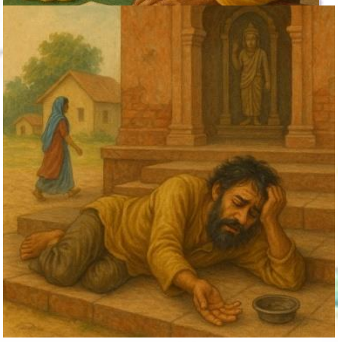

उसके ही नौकरों ने उसे निकाल दिया। परिवार ने भी उसका साथ छोड़ दिया। एक दिन वह मंदिर की सीढ़ियों पर भीख माँगता दिखाई दिया।

ग्रामीण उसे देखकर मुँह मोड़ लेते थे। एक बूढ़ी औरत ने कहा,

"आज उसी की बारी है... जिसने कभी किसी को एक रोटी तक न दी हो।"

संत का आगमन और एक अवसर

एक दिन गाँव में एक बाहरी संत आए। उन्होंने कालूसिंह को देखा–धूल में लिपटा, खाली आँखों से आसमान ताकता। उन्होंने उसके पास बैठकर कहा, "बेटा, जीवन ने तुझे बहुत कुछ सिखा दिया है। अब परिवर्तन का समय है। अगर तू सच में पछताता है, तो एक रास्ता है।"

संत ने उसे पास के जंगलों में 30 किलोमीटर दूर बसे एक ज्ञानी ऋषि के पास जाने की सलाह दी।

थके कदमों से, 3 दिन में वह ऋषि तक पहुँचा। ऋषि के आश्रम के पास पहुँचते ही वह फूट-फूटकर रोने लगा- "मैंने बहुत पाप किए हैं... अब कुछ नहीं बचा..."

नया जीवन : तपस्या और सेवा का मार्ग

ऋषि ने उसे अपनाया और कहा- "पाप तभी धुलते हैं जब हृदय सच में परिवर्तन चाहता है। हर साँस में ईश्वर का नाम लो, और दूसरों को भी उसी राह पर लाओ।" शुरुआत कठिन थी। कालूसिंह को सुबह 4 बजे उठकर गाँव में घूम-घूमकर लोगों को भजन के लिए जगाना पड़ता। लोग पहले हँसते थे, पर धीरे-धीरे उसकी लगन ने सबको चकित कर दिया।

कुछ ग्रामीणों ने भी उसके साथ भजन करना शुरू कर दिया। हर मंगलवार को वह लंगर चलाता, बच्चों को पढ़ाता, और रोगियों की सेवा करता।

संत कालूसिंह का जन्म-

10 वर्षों की तपस्या और सेवा के बाद, गाँव का वो घमंडी ज़मींदार अब संत कालूसिंह बन चुका था। वही लोग जो कभी उससे नफ़रत करते थे, अब उनके चरण छूते थे। उसका नाम अब आस-पास के गाँवों में "परिवर्तन के प्रतीक" के रूप में लिया जाता था।

कहानी से सीख :धन से नहीं, कर्मों से इंसान महान बनता है।

**जश चड्ढा**

**6-C**

## हिंदी भाषा, हमारी भाषा

सुनो सुनो जी सुनो सुनो,
इस प्यारी-सी बोली को सीखो |
क से ज्ञ तक सारा ज्ञान है इसमें,
अ से अ: तक की मिठास सीखो न प्यारे ||
पूरे दिन ये बोली गूँजे,
भारत के हर कोने-कोने |
चाहे दीवाली, होली या नवरात्रि,
हिंदी ने ख़ुशी की बुनियाद बनाई ||

हर घर में जो गाने बजते,
वे हिंदी में ही गाए जाते |
शेरो-शायरी, ढेरों सारी,
लिखी जाती इस अनोखी बोली में ही ||
तो तुम भी समझो इसका महत्व,
जान जाओगे सारा मंतर |
हँसो, खेलो, ख़ुशी से झूमो,
हिंदी भाषा का उत्सव मनाओ ||

**जेनिक्षा निमावत**

**6-C**

# बारिश आई

बारिश आए जोरदार की,
बादल गरजे, बिजली कड़की,
हुआ नाद घनघोर..
मोर करे मनमोहक नाच
सबका मन खुश हुआ आज
बारिश आए जोरदार की..
बारिश गिरे, बच्चे भीगते,
घर पर मम्मी डाँटे,
बारिश आए जोरदार की..

धूप हो और गिरे बारिश,
तो दिखे इंद्रधनुष,
बारिश आए जोरदार की..
बारिश गिरी, फसल उगी
किसान हुए खुश,
बारिश आए जोरदार की..
चारों ओर हरियाली छाई,
बारिश आई, बारिश आई.

**कवीश वैभव सोनी**
**6-G**

# मेरे सहपाठी

मेरे सहपाठी, मेरे सहपाठी,
मेरे सबसे अच्छे संग-साथी,
सोच-समझकर जो न होवे, इनके साथ हो जाए
भली-भाँति,
मेरे सहपाठी, मेरे सहपाठी।
चलें हम संग-संग, पढ़ें हम संग-संग,
होली की छुट्टी में खेले हमने सारे रंग।
शिक्षक जी ने पढ़ाया, खेलने के लिए हमें पड़ी डाँट,
खड़े रहे बाहर  हम साथ-साथ,
मेरे सहपाठी, मेरे सहपाठी।
सुबह के बजे थे आठ,
खोले हमने डिब्बे साथ,
गिर गया मेरा खाना,
उनको आता है,  मेरा दिन बनाना।
मेरे सहपाठी, मेरे सहपाठी।

**कृषिका नारंग 6-K**

## माँ का आँचल

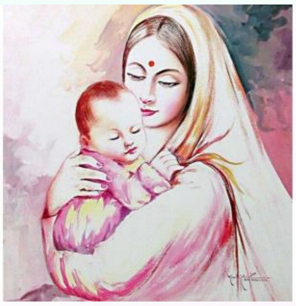

छाँव है जैसे बरगद की,
ममता की नदी बहती जाए ।
दुख में भी मुस्कान लिए,
हर पीड़ा को सहती जाए ।
कभी डाँट में भी प्यार भरा,
कभी नज़रों में सपना ।

उसके आँचल की छाया में,
बचपन बीते अपना ।
माँ सिर्फ एक शब्द नहीं,
पूरी दुनिया का नाम है ।
उसके बिना अधूरी है ज़िंदगी
वे खुद में एक धाम हैं ।

**वर्णिका सचान**

**6-A**

## विजय गाथा भारत की

भारत की कहानी, सबसे महान,
विजय की अपनी है, ये पहचान !
यह विजय गाथा भारत की...।
भारत हुआ आज़ाद, सबने मिल के खुशी मनाई,
गाँधीजी के सपनों की, एक नई सुबह लाई।
गंगाधर ने त्याग कर, बचा ली झाँसी।
यह विजय गाथा भारत की...।
तिरंगे की शान बढ़ी थी तब, जब 83 में मिला विश्व कप,
जब कपिल देव ने, दिखाया अपना दम सब।
हर चौके-छक्के पर, गूँजी थी तालियाँ,
जीत की धुन से, झूम उठी थी गलियाँ ।
यह विजय गाथा भारत की...।
बर्फीली हवाएँ चलती थी, मुश्किलें थी अपार,
फिर भी दुश्मन को दिया मुँहतोड़ जवाब, हर बार।
जीत मिली, तिरंगा लहराया शान से,
याद रहेंगे वो वीर, हमेशा हिन्दुस्तान में।

यह विजय गाथा भारत की...।
चंद्रयान चला, सपना हुआ पूरा,
भारत का नाम चमकता है पूरा।
हर दिल में अब तो, है यही आस,
नित नए शिखर छुए, मेरा भारत महान।
यह विजय गाथा भारत की...।
नाम रखा जो, मिशन का - 'ऑपरेशन सिंदूर ',
शौर्य, बलिदान, और प्रेम का बना वो दस्तूर।
माँ की ममता, पत्नी की आस, बेटी का नन्हा प्यार,
सबको समेटे ऑपरेशन सिंदूर, है भारत का अपार विस्तार।
यह विजय गाथा भारत की...।
शुक्ला चला अंतरिक्ष पथ पर, भारत का गौरव महान,
तिरंगा लहराया वहाँ, देश का बढ़ाया मान।
भारत का परचम, लहराया इस बार,
हर सपना होगा सच, हर बाधा होगी पार।
यह विजय गाथा भारत की...।
कदम-कदम  पर हमने, इतिहास बनाया,
विश्व में अपना परचम, यूँ ही लहराया।
यह विजय गाथा भारत की...।

**प्रज्ज्वल मयंकभाई चिकानी**

**6-G**

# सपनों की उड़ान

सपनों को बाँध धागे से,
ये पंख नहीं फिर टूटेंगे।
जो सपने दिल से सच्चे हों,
वो पत्थर से क्या टूटेंगे ??
रातें चाहे लंबी हों ,
अँधेरे चाहे गहरे हों ।
मन की जो मशाल जले,
वो सूरज से भी तेज़ हो।
लोग कहेंगे - रुक जा तू,
रास्ते कठिन, थक जाएगा।

पर तू चल, भले अकेला,
हर कदम तुझे पहचान दिलाएगा।
हर गिरावट, हर ठोकर ,
एक सबक बन जाए अगर,
तो उड़ान फिर थमती नहीं,
भले ज़मीन कुछ भी कहे मगर।
उड़ चल तू उन बादलों तक,
जहाँ ख्वाबों की छाँव मिले।
जहाँ न कुछ नामुमकिन हो,
बस तू हो और तेरी उड़ान मिले।

**आध्या गौड़**

**7-D**

# आशा जीत की

आशा नहीं थी जीत की
हार की उम्मीद बनी थी ।
अपनी मेहनत पर शक था,
फिर गलतियों को सुधार लिया,
कोशिश की कुछ करने की

चाहत थी लक्ष्य पाने की,
तब कभी न हार हुई ।
फिर अब नौका पार हुई !
अब सफलता की ओर बढ़ें
स्थापित करें "मुकाम नया"

**अर्नव सक्सेना**

**7-M**

# किताबों का स्वाद

शहर के पुराने हिस्से में एक धूल भरी शांत लाइब्रेरी थी, जिसका नाम था 'ज्ञानकोश'| यहाँ के मुख्य लाइब्रेरियन थे रोहन, जो एक संकोची स्वभाव के व्यक्ति थे । जिन्हें किताबों की पुरानी खुशबू से ज़्यादा कुछ और पसंद नहीं था | रोहन का मानना था कि हर किताब की अपनी एक आत्मा होती है।

एक तूफ़ानी शाम जब लाइब्रेरी में कोई नहीं था, रोहन पुरानी अलमारियाँ साफ कर रहे थे । अचानक उनकी उँगली एक छिपे हुए दरवाज़े पर पड़ी जो एक पुरानी, भूली हुई कोठरी की ओर खुलता था । अंदर सिर्फ धूल और मकड़ी के जाले थे और एक लकड़ी की संदूक जिसमें कुछ बहुत पुरानी, बिना शीर्षक वाली किताबें रखी थीं । ये किताबें न तो मोटी थीं और न ही उनमें कोई चित्र था; वे बस सादे, भूरे रंग की थीं।

रोहन ने उत्सुकता से एक किताब उठाई । जैसे ही उन्होंने उसके पन्ने पलटे, उन्हें एक अजीब-सा अहसास हुआ । उनकी आँखों के सामने कुछ शब्द नहीं उभरे, बल्कि उनके मुँह में अचानक आम के पेड़ की ताज़ी मिठास घुल गई । यह कोई कल्पना नहीं थी; उन्हें सचमुच लग रहा था जैसे उन्होंने अभी-अभी पका हुआ मीठा आम खाया हो । वह हैरान रह गए।

उन्होंने दूसरी किताब उठाई. इस बार जैसे ही पन्ने पलटे, उनके ज़ुबान पर बारिश में भीगी मिट्टी की सोंधी खुशबू और ठंडी हवा का स्पर्श महसूस हुआ | यह किसी कहानी को पढ़ने जैसा नहीं था, बल्कि उस कहानी के सबसे गहरे अहसास को सीधे अनुभव करने जैसा था । हर किताब में एक अलग 'स्वाद' था - कभी पराजय की कड़वाहट, कभी पहली जीत का खट्टा-मीठा स्वाद, तो कभी बिछड़े हुए दोस्त के पुनर्मिलन की गरमाहट।

रोहन को समझ आ गया कि इन किताबों में सिर्फ अक्षर नहीं थे, बल्कि ये किताबें भावनाओं और अनुभवों का सीधा सार थीं. इनमें वो पल कैद थे जब किसी ने पहली बार उस कहानी को पूरी गहराई से महसूस किया था । वे सिर्फ पढ़कर नहीं, बल्कि महसूस करके पढ़ी जाने वाली किताबें थीं।

उस दिन के बाद, रोहन का लाइब्रेरी देखने का नज़रिया पूरी तरह बदल गया | उन्होंने उन किताबों को किसी को नहीं दिखाया । वे उन्हें एक गुप्त खज़ाने की तरह रखते थे । जब भी उन्हें अकेलापन महसूस होता, वे उन किताबों में से कोई एक उठाते, और उसके पन्नों का 'स्वाद' लेते - कभी बचपन की शरारतों

की खट्टी यादें, कभी किसी माँ के प्यार की मीठी भावना, और कभी किसी यात्री की अंतहीन यात्रा का थका हुआ स्वाद।

रोहन अब लाइब्रेरियन से कहीं ज़्यादा थे; वे भावनाओं के संरक्षक बन गए थे। जो हर रात 'ज्ञान कोश' की शांत दीवारों के भीतर, शब्दों के परे, जीवन के अनूठे स्वादों को चखते थे और इस तरह, एक लाइब्रेरियन ने किताबों को पढ़ना नहीं, बल्कि उन्हें 'जीना' सीख लिया था।

**प्रभा पाटिल**

**7-K**

## दोस्ती मेरी बातों से

जो दिल में आता है,
बस चुपके से लिख देता हूँ,
कभी सपना, कभी सवाल,
काग़ज़ पे रख देता हूँ।
बचपन की हर याद मेरी,
बातों में मुस्काती है,
कभी कहानी बन जाती है,
कभी कविता गाती है।

शब्दों से है दोस्ती मेरी,
मन की बात कहता हूँ,
कोई सुने या न सुने,
मैं तो सच्चा रहता हूँ।
अब बस यही उम्मीद है,
कुछ अपना जताना है,
'उन्मुक्त' की इस उड़ान में,
मुझे भी कुछ कह जाना है।

**आर्जव जैन**

**8-J**

# भविष्य की कलम : एक वैज्ञानिक बालक की अनोखी कहानी

राम एक 13 साल का होशियार और जिज्ञासु लड़का था। वह बहुत ही बुद्धिमान, बातूनी और विज्ञान का दीवाना था। स्कूल में वह हर विषय में अच्छा था, लेकिन विज्ञान में उसकी विशेष रुचि थी। वह हर रोज़ कुछ नया सीखने और बनाने की कोशिश करता था। राम के एक रिश्तेदार डॉक्टर अजय प्रसिद्ध वैज्ञानिक थे। राम अक्सर छुट्टियों में उनके पास जाता और उनके साथ प्रयोगशाला में समय बिताता। एक दिन, राम के मन में एक अजीब-सी कल्पना आई - क्या कोई ऐसी कलम बनाई जा सकती है जो भविष्य लिख सके? डॉ. अजय पहले तो हँसे, लेकिन राम के उत्साह को देखकर उन्होंने उसकी मदद करने का फैसला किया।

कई हफ़्तों की मेहनत, प्रयोगों और असफलताओं के बाद, आखिरकार उन्होंने वह अद्भुत कलम बना ली। जब भी कोई इस कलम से कुछ लिखता, वह सच हो जाता – ठीक वैसा ही जैसा लिखा गया हो। राम बहुत खुश था। उसका मानना था कि यह कलम मानवता की भलाई के लिए उपयोग की जा सकती है – भूख, बीमारी, गरीबी को खत्म करने के लिए।

लेकिन कुछ ही दिनों बाद, राम ने महसूस किया कि कुछ गलत हो रहा है। दुनिया भर में अजीब घटनाएँ घटने लगीं –शेयर मार्केट तबाह होने लगा, और कई नेता रहस्यमय तरीके से बीमार पड़ने लगे। राम को शक हुआ कि कहीं किसी ने इस कलम का गलत इस्तेमाल तो नहीं किया? राम ने गहराई से जाँच की तो पता चला कि कलम को किसी ने चुरा लिया था। वह व्यक्ति इसे अपने निजी स्वार्थ और दुनिया को नुकसान पहुँचाने के लिए इस्तेमाल कर रहा था। राम का दिल टूट गया। उसने कभी सोचा भी नहीं था कि उसकी खोज इतनी भयानक हो सकती है। राम ने तुरंत एक निर्णय लिया – इस कलम को नष्ट कर देना चाहिए। वह चुपचाप उस व्यक्ति तक पहुँचा, कलम को वापस लिया और एक गुप्त स्थान पर जाकर उसे पूरी तरह नष्ट कर दिया। उस दिन राम ने एक महत्त्वपूर्ण सबक सीखा -"हर आविष्कार तब तक सुरक्षित है, जब तक वह अच्छे हाथों में हो। विज्ञान का उद्देश्य मानवता की सेवा है, न कि विनाश।" अब राम और भी समझदार हो गया था। उसने तय किया कि भविष्य में वह जो भी बनाएगा, वह सिर्फ और सिर्फ लोगों की भलाई के लिए होगा।

**शिक्षा:** विज्ञान एक महान शक्ति है लेकिन इसका इस्तेमाल सोच-समझकर करना चाहिए।

**दीक्षा सत्पथी**

**8-J**

# श्री कृष्ण सदा सहायते

जिनके नाम से ही उज्ज्वल होते कण-कण के प्राण हैं
वही कृष्ण, वही कान्हा, दामोदर , वही पालन हार हैं
प्रेम की प्रतिमा हैं;
वो स्वयं नारायण के अवतार हैं।
चलिए शब्दों से ही एक सुंदर चित्र बनाते हैं,
उनकी गरिमा का एक अंश बताते हैं
"उनका तेज़ है पावन, कठिन है वर्णन
उनकी महिमा;
जब प्रेम सिखाने लीला रची,
तब आनंद में भरा वृंदावन ।
सारा ब्रह्माण्ड है उनके मुख में समाया,
सभी ने वही पाया जो उनके भाग्य में था,
जब-जब उचित समय था आया,
बालपन में मैया को खूब सताया,
परंतु उनकी लीला का अंत आज तक कोई ढूँढ नहीं पाया ।
जब-जब सबने उन्हें समझा, पहचाना,
हर कोई मुस्कराया,
ना केवल गीता का उपदेश दिया,
धर्म पालन का तो उदाहरण बन समझाया ।
उनकी कथा सुनकर सभी का मन उन्हीं के गुणगान गाता है,
एक बात तो स्वयं सर्व ज्ञाता को भी पता है
कि उनकी हर योजना सफल जाती है,
जब तक उनके साथ उनके बलराम भ्राता है ।
हम सब के आराध्य श्री कृष्ण के नाम से ही पार हो जाती हर एक बाधा है,
उनका नाम सर्वदा ऊँचा ही रहेगा क्योंकि उनके नाम से जुड़ी उनकी राधा है ।
जब भी हो कोई उलझन सही मार्ग वह सदा दिखाते,
हमें हमारे कर्मों को वह पूर्ण कराते,
कुछ भी हो ये सदा स्मरण रहे,
श्री कृष्ण सदा सहायते ।

**दिविजा मेहता 8 L**

# मेरी उड़ान

मैं हूँ एक नन्ही चिंगारी,
पर अंदर है आग सारी।
सपनों को मैं गिनती नहीं,
उन्हें हकीकत बनाती हूँ सही।
मैं डरती नहीं अँधेरों से,
मैं लड़ती हूँ सायों से।
हर मुश्किल को पार करूँ,
हर दिन खुद से प्यार करूँ।
किताबें मेरी साथी हैं,
कलम मेरी बाती है।

ज्ञान की रोशनी में चलूँ,
हर सवाल का हल निकालूँ।
मैं लड़की हूँ, कमज़ोर नहीं,
मैं चुप रहूँ – ये मंज़ूर नहीं।
हर सोच को नई उड़ान दूँ,
हर सपने को पहचान दूँ।
मैं झुकूँ नहीं, रुकूँ नहीं,
मैं बहती नदी की धारा हूँ।
जो चाहे रोक ले राह मेरी,
मैं हिम्मत की चिंगारी हूँ।

**लावण्या ढींगरा**

**8-J**

# पीढ़ियों का पुल : समय के साथ

हम आज जिस दुनिया में जी रहे हैं, वह विभिन्न पीढ़ियों के जीवन और मूल्यों के निरंतर विकास का परिणाम है। जेनरेशन X की सादगी और सहनशीलता से लेकर मिलेनियल्स की अनुकूलता और अंततः जेन Z की डिजिटल समझ तक, हर पीढ़ी की अपनी विशेष जीवनशैली, चुनौतियाँ और योगदान हैं। पीढ़ियों का अंतर केवल उम्र का फर्क नहीं है–यह सोच, संस्कृति, आदतों और जीवन जीने के तरीके का अंतर है।

जेनरेशन X: सादगी और मजबूती का युग

1960 से 1980 के बीच जन्मी जेनरेशन X ने एक ऐसा जीवन जिया जिसमें प्रकृति, सच्ची दोस्ती और मानव संबंधों की अहमियत थी। वे जंगलों में घूमते, गिल्ली डंडा और कंचा जैसे पारंपरिक खेल खेलते और आधुनिक लतों से मुक्त जीवन जीते थे। उनकी शामें दोस्तों और परिवार के साथ मोहम्मद रफ़ी और लता मंगेशकर के गीत सुनते हुए बीतती थीं–वो भी एक बड़े से रेडियो पर। वे पौष्टिक और घर का बना खाना खाते थे और हर पर्व को पारंपरिक ढंग से बड़े उल्लास के साथ मनाते थे। उस समय चीजें बहुत सस्ती हुआ करती थीं–25 पैसे में एक महीने का राशन मिल जाता था ! वे बेहद रचनात्मक भी थे और बहुत से लोगों ने ब्रिटिश शासन से आज़ादी की लड़ाई में भाग लिया।

मिलेनियल्स : पुराने और नए के बीच का पुल

1980 से 1996 के बीच जन्मे मिलेनियल्स ने उस दौर में जीवन जिया जब तकनीक ने तेजी से विकास करना शुरू किया। ये वो पीढ़ी है जिसने मोबाइल के बिना भी जीवन देखा है और उसके साथ भी। उन्होंने शिक्षा में तेज़ी से वृद्धि देखी, रोजगार के नए अवसर आए, और कई लोगों ने नौकरी छोड़कर खुद का व्यवसाय शुरू किया।

अधिकतर लोग संयुक्त परिवारों में रहते थे, जहाँ आपसी संबंध और संवाद बहुत महत्त्वपूर्ण थे। त्योहारों पर अब भी क्षेत्रीय व्यंजन बनाए जाते थे और यात्रा के लिए कठोर नक्शे और शुरुआती जीपीएस का उपयोग होता था। यह पीढ़ी पहली थी, जिसने कंप्यूटर, फ्लॉपी डिस्क, वॉकमैन और हेडफोन का उपयोग किया। हालाँकि तकनीक बढ़ रही थी, पर उनका जीवन अब भी साधारण और अर्थपूर्ण था। उन्होंने परंपरा और तकनीक के बीच संतुलन बनाकर रखा।

जेन Z : एक डिजिटल दुनिया में जन्मी पीढ़ी

1997 के बाद जन्मी जेन Z ने आँखें एक ऐसे समय में खोली जब दुनिया पहले से ही गूगल, वाईफाई और अब चैट जीपीटी से जुड़ चुकी थी। यह पीढ़ी बेहद तकनीकी रूप से सक्षम है और नई तकनीकों को अपनाने में तेज़ है। वे पश्चिमी संस्कृति को तेज़ी से अपनाते हैं और नई चीजें ईज़ाद करने के लिए उत्सुक रहते हैं- जैसे रोबोट, ए.आई., टिकाऊ उत्पाद आदि। लेकिन यह सब एक दुधारी तलवार की तरह है। जहाँ जीवन अधिक आरामदायक हो गया है, वहीं सामाजिक मीडिया की लत, कम संवाद कौशल और एकाकीपन जैसी समस्याएँ भी बढ़ी हैं। आज का युवा अस्वस्थ और केमिकल भरा खाना खा रहा है, पारंपरिक व्यंजन पीछे छूटते जा रहे हैं। परिवारों से दूरी, अलग-अलग रहन-सहन, और बढ़ती बेरोज़गारी (विशेषकर ए. आई. के कारण) एक चिंता का विषय बन चुके हैं। हालाँकि, इस पीढ़ी के लोग मानसिक स्वास्थ्य की देखभाल को प्राथमिकता देते हैं और सिर्फ पैसे के पीछे भागने से बचते हैं। वे नई तकनीकों से समस्याओं को हल करने का प्रयास कर रहे हैं, लेकिन फिर भी जीवन की गुणवत्ता में गिरावट देखी जा सकती है।

निष्कर्ष : पीढ़ियों के बीच सेतु

पीढ़ियों का अंतर स्वाभाविक है लेकिन इसे समझना और अपनाना आवश्यक है। हर पीढ़ी समाज में अपना विशेष योगदान देती है– चाहे वह जनरेशन X की सादगी हो, मिलेनियल्स की संतुलित सोच हो या जेन Z की डिजिटल कुशलता।

हमें इस अंतर को विभाजन नहीं, बल्कि सेतु की तरह देखना चाहिए–एक ऐसा अवसर, जिससे हम अतीत से सीखकर वर्तमान को समझकर भविष्य को बेहतर बना सकते हैं।

**नभ्य नितिन हरसुलकर 8-L**

# आखिरी टिफ़िन

**वीर धवल पटेल**

**8-A**

# गिल्लू

वेदांत सतासिया
9-A

# देवभूमि की शान

जय हो गंगा मैया की !
हर हर गंगे ! हर हर गंगे !
माता बनकर भारत को स्वस्थ रखना,
पुत्री बनकर पिता हिमालय की शीतलता और
पवित्रता को बनाए रखना,
वामा बनकर समुद्र का हाथ थामना,
ये ही उत्तराखंड को देवभूमि बनाती है!
इनकी शीतलता का कोई मूल नहीं,
और उनकी पवित्रता और आकर्षण के समान कोई
और नहीं।

इनकी गोद में तीन बार बैठना,
यानी कल, आज और कल,
के सारे दोष बहा देना।
गंगा हमारी माता है,
तो आओ मिलकर ठानें,
गंगा माँ को प्रदूषित न करें,
और देवभूमि की पवित्रता को बनाए रखें।
जय हो गंगा मैया की !
हर हर गंगे ! हर हर गंगे!

**काम्या निसर्ग भट्ट**
**9-K**

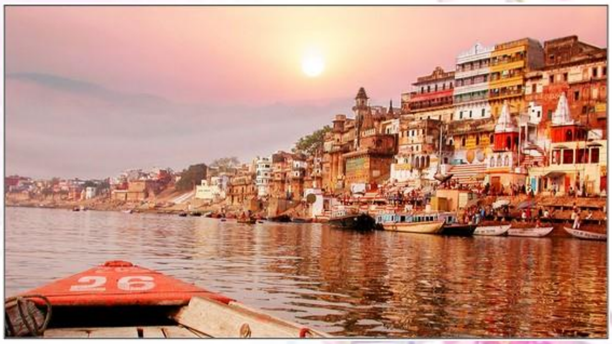

# चलो उठें फिर से दिन

चलो उठें फिर से –
धूल झाड़ कर सपनों की,
हौसलों की गठरी बाँधकर
चुनौतियों की राह पर चलें फिर से...
हर चोट ने ही तो सिखाया
कहाँ कमज़ोर थे हम।
ठोकरें लगेंगी बहुत
मगर क्या डरना दोस्त उनसे...
रातें लंबी हो सही,
पर सुबहें रूठी न कभी,
रोशनी का दामन थाम
निकलें बाहर हर बार अँधेरे से...

जो गिरा – वो टूटा नहीं,
जो टूटा – वो फिर से बना,
इसी में है जीवन का सार,
हार को जीत में पिरोना सीखें जिंदगी से...
कदम लड़खड़ाएँ तो क्या,
रुक जाएँ – ये मंज़ूर नहीं,
आँधियाँ आएँ तो आएँ,
पर दीपक बचाएँ सदा बुझने से..
चलो फिर से बुन लें ख्वाब ,
चलो फिर से उम्मीद करें,
चलो फिर से मुस्कराएँ –
गिर गए तो क्या, चलो उठें फिर से...

**लक्ष्य पांडे**

**9-A**

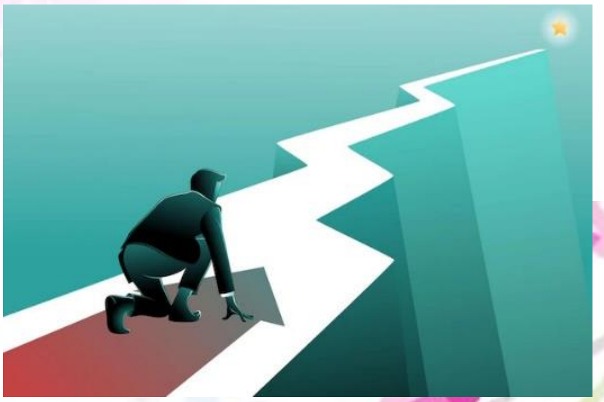

# ज़िन्दगी एक क्रिकेट है

ज़िन्दगी एक क्रिकेट है ,दुनिया एक पिच है ।
जान जैसे एक विकेट है , ज़िंदगी एक क्रिकेट है ।।
हर इंसान बल्लेबाज है और बॉलर यम का दूत है ,
विकेट कीपर यमराज हैं तो अंपायर भगवान हैं।
जान जैसे एक विकेट है, जिंदगी एक क्रिकेट है ।।
गिल्लियाँ उड़ जाने का मतलब प्राण पखेरू उड़ जाते हैं,
और एलबीडब्ल्यू होना तो जैसे होना एक एक्सीडेंट है |
जान जैसे एक विकेट है, जिंदगी एक क्रिकेट है ।।

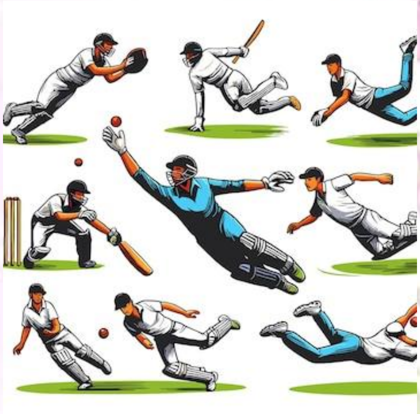

कैच आउट होनेवाले की हत्या मानी जाती है ,
रनआउट होनेवाले को वीरगति मिल जाती है।
आत्महत्या करना तो होना हिटविकेट है ,
जान जैसे एक विकेट है,जिंदगी एक क्रिकेट है ।।
इस पर भी कुछ ऐसे हैं जो नॉटआउट रह जाते हैं,
और महापुरुष मर कर भी कॉमेंटेटर बन जाते हैं ।
करते दिस एंड दैट हैं,
जान जैसे एक विकेट है, जिंदगी एक क्रिकेट है ।

**सम्यक जैन**

**9-I**

# जब अंधकार में अकेला हो चलना

जब अंधकार में अकेला हो चलना,
जब रवि का निश्चित हो ढलना,
जब छूट जाए भानु-प्रभा का साथ,
तब अंतर का दीप जलाकर
देनी है अँधेरे को मात ।
अश्रु को रुलाना होगा,
हताशा को हराना होगा,
भय को भी डराना होगा,
उम्मीद की लकीर तोड़नी नहीं है ।
हौसले की बुनियाद छोड़नी नहीं है ।
हार का सम्मान करो, वह सबसे श्रेष्ठ गुरु है
जो जीत कभी न सिखा सकी वो हार सिखा गई,
वह जीवन का सत्य सिखा गई ।
जीवन एक महाकाव्य है जहाँ 'हार'
तो केवल एक छंद है,
हार से डरने वालों का, इस काव्य में प्रतिबंध है ।
कभी-कभी अंधकार में अकेले भी चलना पड़ेगा ।
तो कभी रवि को भी ढलना पड़ेगा
मगर ये तो जीवन का भाग है,
अँधेरे में चलते हुए जलानी अंतर की आग है ।

**विहान ठक्कर**
**9 B**

## काशी का सच

गंगा की लहरों पर चंदा मुस्काए,
घंटों की गूँजों में शिवजी समाए,
आरती की लौ में भक्ति का भाव,
हर दिल में बसी है भोले की छाँव।
घाटों पर बिखरी है सादी-सी रौनक,
हर मोड़ पर मिलती है आध्यात्मिक झलक,

वो पान और साड़ी वो ठेठ बनारसी,
बातों में रस है, मिठास है खास-सी।
मणिकर्णिका बोले- "अंत यहीं है"
और अस्सी बोले- " जीवन वही है"
काशी नहीं बस शहर कोई सादा,
यह तो है मोक्ष का खुलता दरवाज़ा

**सान्वी दीक्षित**
**9-L**

## हिम्मत की दाद हो आप

पापा,
हिम्मत की दाद हो आप,
परिवार का साथ हो आप,
ख्वाहिश पूरी करनी है हमारी,
कि भूल जाएँ सारी ख्वाहिशें अपनी।
बाहर से सख्त, पर,
अंदर से नरम हो आप
कोई न जाने,
कितने महान हो आप।

हर फर्ज़ निभाते हो आप,
हर कर्ज़ चुकाते हो आप।
पर जीवनभर भी काम करके,
कभी थकते नहीं हो आप।
अपना प्यार कायम रखते हो आप,
आपके जैसा और कोई न बना।
क्योंकि हम बच्चे कभी नहीं भूलेंगे,
हमारे लिए क्या-क्या कुरबान
है आपने किया ।

**आरिणी बोर ठाकुर**
**9-C**

# बूँदों के किस्से

मेरी खिड़की पर काले बादल छा जाते,
धीरे-से दिल के राज़ सुन जाते।
टपकती बूँदें कहतीं कुछ अनकहा,
जैसे जानती हों मन का हर किस्सा।
लोग कहते – मैं जल्दी बड़ी हो गई,
सपनों की राहों में कहीं खो गई।
न चेहरा सही, न दिल सही,
हर कदम पर गलत ठहराई गई।

फिर भी हँसकर खुद को सँभालती,
मन की हलचल छिपा जाती।
ये बारिश ही है जो साथ निभाती,
न डाँटती, न कोई सवाल उठाती।
हर बूँद मुझे हल्का कर जाती,
थोड़ी उम्मीद भी दिला जाती।
और उस पल लगता यूँ कहीं –
मैं भी शायद सही हूँ यहीं।

**सान्वी केशरी**

**10-B**

# मेरी दोस्ती

दोस्ती एक मीठा-सा नाता,
हर दुख-सुख में साथ निभाता।
खेलें-कूदें, हँसते जाएँ,
कभी न हम दूर हो पाएँ।
साथ हो जब मेरा दोस्त प्यारा,
हर दिन लगे सबसे न्यारा।

छोटे-छोटे पल मुस्काते,
हम मिलकर सबको भाते।
रूठ जाए जो कोई यार,
मनाना है फिर हमको हर बार।
दूसरों की खुशी में मुस्काएँ,
सच्चे दोस्त वही कहलाएँ।

**सियोना सिंघल**

**10-A**

## समय की महत्ता

समय जीवन की राह है,
यह जीवन की धारा है |
समय व्यर्थ नहीं खोना है,
सदुपयोगी जीवन बनाना है|
जीवन सुख-दुःख, दिन-रात का खेल है,
समय बड़ा बलवान है, जिसे हमें नहीं खोना है |
आज करे सो कल कर,
कल करे सो परसों,
जीना है अभी बरसों, इस मिथ्या से दूर रहो |
समय की डोर नाज़ुक है,
समय की महत्ता को समझो |
समय कार्य की पूँजी है,
समय ज्ञान की जननी है |

समय ही अनुशासन है,
समय भविष्य की डोर है |
भूत-भविष्य की चिंता छोड़ो,
आज पर ध्यान करो |
समय-समय पर काम करो,
जग में कुछ नाम करो |
अपना समय बर्बाद न करो,
क्रोध, चिंता, शिकायत और पछतावे में|
यह समय की बर्बादी है,
काम करो, कुछ नाम करो,
समय की सदुपयोगिता ही,
जीवन में सफलता की कुंजी है,
यही समय की महत्ता है |

**कमल नयन सिंह**
**10-A**

## सपनों का स्कूल

काश ! मेरा स्कूल कुछ ऐसा होता,
जहाँ सुबह जल्दी नहीं उठना पड़ता।
घड़ी की टिक-टिक डराती न हो,
माँ की डाँट हर रोज़ सुननी न हो।
टीचर मुस्कुरा कर कहतीं –
“आज होमवर्क नहीं, कहानी सुनानी है।”
क्लासरूम में किताबों की जगह,
खेलों की धुन और हँसी की गूँज बहती।

लाइब्रेरी में कॉमिक्स और कविताएँ होतीं,
इतिहास में राजा-रानी गाने गाते।
हर पीरियड में कुछ नया, कुछ मज़ेदार,
हर दिन लगता हो जैसे कोई त्योहार।
काश! ऐसा स्कूल हो एक दिन सच में,
जहाँ पढ़ाई भी लगती हो जैसे कोई खेल।
सपनों का स्कूल, जो दिल से जुड़ जाए,
हर बच्चे को आगे बढ़ना सिखाए।

**पियांशी जावरिया**
**10-A**

## वन की एक भोर

एक घने वन की भोर
जब मेघों का एक छोर।
बरसाए अमृत धारा
यही किसी नीम की छाँव में बैठे
बजाए बंसी नटखट केशव हमारा।
मुरली की मधुर गूँज में घिरे
मोर पक्षी इधर-उधर फिरे
ऐसे लय-बद्ध की ताल में
झूम रहा है वन सारा।
इधर कृष्ण ने अपनी प्रिया को पुकारा
प्रभु की पुकार सुने
भागी-भागी आती है राधा
पलाश के फूलों की चादर ओढ़े।

अपने प्रेमी की झलक से फूला है उसका मन
उसके मन को पढ़कर खुश हुए कृष्ण
कैसे चुपके-चुपके चाव से ताके उनकी राधा
माधव के नेत्र देख मुस्काती है ज्यादा
सहमी सहमी-सी सोचे अपने मन में
काश मैं बरसती बूँद होती
उन्हें झट से स्पर्श कर
उनके चरणों को छूती।
ऐसा अद्भुत दृश्य देख
खिल उठा बृजवासियों का मन
वैसे ही झूमे हैं
जैसे हर्ष में पूरा वृंदावन ।

**प्रियल अग्रवाल**

**10-A**

## वक़्त की चाल

वक़्त चला जाता है धीरे,
न रुकता है, न कुछ बोले।
कभी हँसी लाता है साथ,
कभी छोड़ता ग़म की बात।
बचपन की वो प्यारी यादें,
अब बन गई हैं मीठी बातें।
कंचे, पतंगें, दोपहर की धूप,
छूट गई सब – बस रह गया रूप।

अब तो किताबें, सपने, सवाल,
हर दिन चलता है बड़ा जाल।
लेकिन मन कहता है बार-बार,
थोड़ा मुस्कुरा, थक गया है यार।
जो बीत गया, वो सपना था,
जो आज है, वो अपना है।
हर पल को खुलकर जी लेना है,
कल क्या हो, ये किसने जाना?

**रुद्र प्रताप बोहरे**

**10-A**

# शिक्षक

# सृजन

# हमारी हिंदी

दिल की भाषा है हिंदी,
भावनाओं की अभिव्यक्ति है हिंदी,
दिल की बात दिल तक पहुँचने का साधन है हिंदी,
घर, परिवार, स्नेह, संस्कृति की गरमाहट है हिंदी,
अपनी मिट्टी, परंपराओं को जोड़ने का माध्यम है हिंदी,
आत्मीयता और गर्व से
अपनाएँ प्यारी हिंदी,
हमारी मातृभाषा ही नहीं
दिल की धड़कन है हिंदी ॥

**श्रीमती वीणा माथुर**

# वाणी

न अस्त्र कोई है बड़ा, न शस्त्र कोई है बड़ा,
कटु ये तेरी वाणी है जो नष्ट कर रही धरा ॥
विचार के प्रवाह को, सदा जो गतिमान हो,
उचित दिशा व मार्ग दो, वाणी को सँवार लो ॥
भाव के अतिरेक में, रहो सदा विवेक में
आचरण में नम्रता, करो न कोई धृष्टता ॥
अमूल्य अपनी वाणी को, लगाम दो, सुधार लो,
जीतने की होड़ में, कहीं बढ़े न भिन्नता ॥
कहो वही जो सुन सको, प्रकट करो उदारता,
घोल दो इस विश्व में, स्ववाणी की मधुरता ॥

**श्रीमती सौदामिनी पाठक**

## हिंदी दिवस मेरे

हिंदी दिवस से परहेज है मुझे !
मैं हिंदी दिवस नहीं मानता
और क्यों मनाऊँ?
मैं वही हूँ
जो रोज हिंदी मानता है
दिवस तो बस आता जाता है
फिर 14 सितंबर को न थोपो
मैं हिंदी ही खाता
मैं हिंदी ही पीता हूँ
मैं हिंदी में ही जीता हूँ ।
दुःख तो इस बात का है
कि अपनी बात
रखने के लिए, समझाने के लिए
दिन में कई बार हिंग्लिश का हो जाता हूँ ।
जो जानते हैं मुझे, वे मानते हैं मुझे
हिंदी शिक्षक ही मात्र पहचानते हैं मुझे
लोग कहते हैं कि पिछड़ी है ये
मैं कहता हूँ पछाड़ी गई है ये
आंग्ल भाषा के चक्कर में
दबाया, मरोड़ा, रौंदा है इसे
हिंदी के पुरोधाओं के संदेश
सुबह से लेकर शाम तक
बधाइयाँ देते हैं इस दिवस की ।
जिनके अंतःकरण गद्गद् होते हैं आज
हिंदी से ही जो अर्जन करते हैं
हिंदी से ही जिनके परिवार चलते हैं ।
और पूर्ण श्रद्धा से
पढ़ाते हैं अपने बच्चों को,

अंग्रेजी माध्यम में
और भूल से जो बच्चा कच्चा हुआ, विदेशी भाषा में
तो उस भाषा के मास्टर ब्लास्टर को
घर बुलाकर पढ़वाते हैं ये
यदि भूल से जो पूछ दिया तो
कहते हैं भाई!
कैरियर तो इसी से बनेगा
नहीं तो हमारी तरह रह जाएगा
जब इतनी ग्लानि है इस भाषा से
तो फिर क्यों? तो फिर क्यों और तो फिर क्यों?
हिंदी का खाते हो
और गुण नहीं गाते हो
वाह रे! हिंदी के चाहने वाले
जय हो तेरी हिंदी की !
जय हो हिंदी दिवस की !!!

श्री मान् अनुरागसिंह सेंगर

## एक शिक्षक का शिष्य के नाम संदेश

गुरु ने मुस्कुराकर कहा –
"पुस्तकें पढ़ना जरूरी है,
पर जीवन की किताब
पन्नों में नहीं, अनुभवों में मिलती है।
अंक तुम्हें नौकरी देंगे,
पर व्यवहार तुम्हें सम्मान देगा।
जीत पर मत इतराना,
हार से मत घबराना,

दोनों तुम्हें सिखाने आए मेहमान हैं।
अपनी जड़ों को थामे रहना,
पर पंखों को बाँधना मत,
क्योंकि जो उड़ना भूल जाता है
वह अपने ही आकाश से दूर हो जाता है।
और हाँ,
सफलता का सबसे मीठा फल
हमेशा उस पेड़ पर उगता है
जिसकी जड़ें विनम्रता में होती हैं।
छात्र ने सिर झुका लिया,
क्योंकि उसे समझ आ गया था –
गुरु केवल पढ़ाते नहीं,
जीना भी सिखाते हैं।

**श्रीमती शोभा गौड़**

## भारत का भोजन और व्यंजन
## हमारे पेय पदार्थ दिन

भारत एक ऐसा देश है जहाँ एक ओर बर्फ़ीला हिमालय है तो दूसरी ओर अथाह महासागर है। कहीं रेगिस्तान है तो कहीं पठार और कहीं समतल मैदान, यहीं पर पूर्वी और पश्चिमी घाट जैसे पहाड़ी क्षेत्र भी हैं। इसलिए हमारे देश के भोजन में भी विविधता है। गर्मियों के मौसम में हर प्रदेश में उपयोग में लिए जाने वाले कुछ पेय पदार्थ जो हमें शीतलता तो प्रदान करते ही हैं, साथ ही साथ अपने पौष्टिक गुणों से हमें स्वस्थ रखते हैं। आइए कुछ भारतीय पेय पदार्थों के बारे में जानें-

1. सत्तू- उत्तर भारत में पिया जाने वाला सत्तू जौ के दानों को भूनकर व पीसकर बनाया जाता है। इसका सेवन नमक, हल्दी और पानी के साथ किया जाता है। इसमें फ़ाइबर और कार्बोहाइड्रेट की मात्रा अधिक होने के कारण यह ऊर्जा का स्रोत है। यह डायबिटीज़ में लाभदायक, वज़न घटाने में सहायक तथा हृदय रोग को नियंत्रित करने में मदद करता है।

2. बुरांश - उत्तराखण्ड में पाए जाने वाले रोडोडेंड्रोन के फूलों से बना जैली जैसा गाढ़ा बुरांश हमारे दिल को स्वस्थ रखता है, शरीर को डिटॉक्स करता है तथा टॉक्सिंस को शरीर से बाहर निकालने में सहायक होता है।

3. नीरा - ताड़ व खजूर के पेड़ का ताज़ा रस तथा नारियल के फूलों के गुच्छे का रस नीरा कहा जाता है। यह आयु की वृद्धि में सहायक होता है। त्वचा में निखार लाने के साथ- साथ जोड़ों के दर्द, अस्थमा, दमा तथा यूरिन इंफेक्शन से बचाव में लाभदायक होता है।

4. तोरानी- उड़ीसा में लोकप्रिय पके चावल का पानी जिसका सेवन दही के साथ किया जाता है। यह लू से बचाता है, गर्मी की थकावट कम करता है तथा पेट का स्वास्थ्य बेहतर बनाता है। यह विटामिन बी से भरपूर होने के कारण तंत्रिका तंत्र को भी मज़बूत बनाता है।

5. जिगरथांडा- दक्षिण भारत के मदुरै का प्रसिद्ध यह पेय पदार्थ सरसपैरिला रूट सिरप, बादाम के गोंद, दूध, चीनी और आइस्क्रीम के साथ बनाया जाता है। बादाम का गोंद जिगर से लेकर पेट तक की गर्मी को दूर करता है।

6. बेल का रस - बेल नामक फल से बना यह रस शरीर को डिटॉक्स करता है, शरीर को ठंडक प्रदान करता है, डायरिया से राहत दिलाता है, शरीर से विषैले पदार्थ बाहर निकालकर खून को साफ़ करता है। यह कोलेस्ट्रॉल के स्तर को नियंत्रित रखने के साथ कैंसर और त्वचा के रोगों से बचाव में मदद करता है।

7. फालूदा- सेंवई, गुलाब सिरप, मीठी तुलसी के बीजों(सब्ज़ा) से बना पेय शरीर को ठंडक प्रदान करता है। रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के साथ- साथ तनाव को कम करता है, सब्ज़ा के बीज प्रोटीन और आयरन का स्रोत होने के कारण बालों को भी मज़बूत बनाते हैं। इसमें मुँह के छालों को ठीक करने वाले एंटी बैक्टीरियल, एंटी वायरल और एंटी फंगल तत्त्व भी होते हैं। ये वजन घटाने में भी मदद करते हैं।

8. आम-पन्ना- कच्चे आम से बनने वाला आम-पन्ना शरीर को हाइड्रेट रखता है, पाचन क्रिया में मदद करता है, और लू से बचाता है। इसमें विटामिन सी और एंटी ऑक्सीडेंट होते हैं जो रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाते हैं। विटामिन ए से भरपूर होने के कारण ये आँखों से संबंधित बीमारियों से भी बचाता है। इसमें उपस्थित फाइबर कब्ज़ से राहत दिलाता है। आयरन रक्त में हीमोग्लोबिन के स्तर को बढ़ाने में मदद करता है।

तो ये हैं- हमारे देश के विभिन्न प्रदेशों में उपयोग किए जाने वाले कुछ प्राकृतिक पेय पदार्थ जो पौष्टिक होने के साथ-साथ स्वास्थ्यवर्धक भी हैं।

**श्रीमती हेमलता राठौर**

# माँ

माँ शब्द अपने-आप में ही शीतलता दर्शाती है ।
यह एक छोटा -सा शब्द अपने आप में पूरा संसार है।
कहावत है- 'माँ है तो सब कुछ है और माँ नहीं तो कुछ नहीं' ।
बचपन में सबसे पहला बोला जानेवाला शब्द है 'माँ' !
हर दु:ख हर तकलीफ़ में सबसे पहले याद आनेवाला शब्द है- 'माँ' !
हर बच्चे की सबसे पहली और प्रिय गुरु है माँ ।
बच्चा चाहे कितना भी बड़ा हो जाए, लेकिन माँ के लिए तो बच्चा ही रहेगा ।
हर स्थिति हर हालात में माँ हमेशा प्रेरणादायी होती है।
शत-शत नमन है हमारी जननी को जो खुद दु:ख झेलकर
अपने बच्चों के लिए ढाल बनकर सदा तैयार रहती है ।

**श्रीमती नियती अग्रवाल**

# डर लगता है

डर लगता है उस माँ के हाथों से
जो अभी-अभी पुत्र चाह में
अपने आँखों के सम्मुख कत्ल कर
आई है अपनी ही पल्लवित छवि के स्वर्णिम
भविष्य का।
डरने लगा हूँ आजकल हर उस चीख से
जो ढाई जाती है,
कुचली जाती है,
मरोड़ी जाती है,
नव पल्लवित हो रही फूलों के तन-मन पर।
डरने लगा हूँ
उन होमोसेपियंस से..
जो उभारते हैं
उन्हें............
जिनसे जने जाते हैं
स्वयं भी...पीढ़ी-दर-पीढ़ी।
डरता हूँ उस आर्तनाद की हर चीख से
जो अत्यंत पीड़ा में भी
किसी की खुशी का स्रोत बनती है
कभी माँ, बहन, प्रेमिका, पत्नी बनकर।
डरने लगा हूँ आजकल उन माँ-बाप से
जो इज्जत का मिथ्यावादी चोला पहनकर
कत्ल करते हैं
स्वजन्मी, स्वपल्लवित प्रकृति की गोद में
पनपे प्रेमी-युग्म जन का।
डर लगता है आज मुझे
अपने सपने
अपनी ही आहट
अपनी परछाई
न जाने किस-किस से?

**श्रीमान् रोशन कुमार झा**

## दोस्ती

दोस्ती एक मीठा-सा गीत,
हर दिल को लेता ये जीत।
साथ चलें हम हँसते-गाते ,
एक दूजे का साथ निभाते।
सच्चा दोस्त जो काम आए,
हर पल यारी को निभाए।

खेलें, पढ़ें और करें बातें,
खुशियों की बाँटें सौगातें।
फूलों में जैसे होती खुशबू,
दोस्ती में होता है जादू।
सच्ची दोस्ती करके तुम देखो,
कितनी इसकी बात निराली।

**श्रीमती पारूल अगरवाल**

## मेरा संसार

माँ और पापा से बनता है एक सुंदर और सुरक्षित परिवार
अगर पापा परिवार की रीढ़ हैं,
तो माँ उस परिवार का दिल हैं।
पापा मेरी हर इच्छा पूरी करते हैं,
तो माँ मेरे लिए मेरी मनपसंद चीज़ें बनाकर मुझे खुश करती हैं।
दोनों ही हर मोड़ पर मेरा साथ देते हैं,
हर परिस्थिति में मेरी रक्षा और हौसला बढ़ाते हैं।
माँ और पापा, मैं सच में बहुत सौभाग्यशाली और धन्य हूँ कि आपकी बेटी हूँ।
मैं हमेशा कोशिश करूँगी कि आपको मुझ पर गर्व हो।
माँ और पिता से बनता है एक पूरा संसार।

**श्रीमती रेणुका पिल्ले**

## समय

समय बड़ा बलवान है,
किसी के लिए नहीं रुकता है ।
आज करेंगे, कल करेंगे हम सोचते हैं ,
और समय भागता जाता है ।
जो समय का आदर करता है ,
उसका समय आदर करता है ।
जो सही काम करे सही समय पर ,
समय उसको बिठाएँ पलकों पर ।
समय का जो मूल्य पहचानेगा ,
उसे समय मूल्यवान बनाएगा ।

**श्रीमती स्वाति पंड्या**

## प्रकृति

प्रकृति का उपहार
नीला अंबर हरियाली छाई,
पर्वत नदी, झरने की छाई
चिडियाँ गाएँ मीठे ग़ीत v
हर सुबह देती है नई प्रीत ।
सूरज की किरणें मुस्काएँ,
फूलों की खुशबू महकाएँ।
बादल उड़ते, हवा चलती,
प्रकृति की हर बात है निराली
पेड़ लगाओ, जल बचाओ,
प्रकृति को ना कभी दुखाओ।
धरती माँ का ये उपहार,
सब मिलकर करें इसका सत्कार

**श्रीमती ऋत्वी उपाध्याय**

## संपादकीय मंडल

| | |
|---|---|
| प्रमुख कार्य प्रभारी : | श्रीमती वीणा माथुर |
| संपादिका : | श्रीमती सौदामिनी पाठक |
| संकलन कर्ता : | श्री अनुराग सेंगर |
| | श्रीमती हेमलता राठौर |
| प्रतिलिपि शोधनकर्ता : | श्रीमती शोभा गौड़ |
| | श्री रामअवतार सिंह |
| | श्री रोशन झा |
| पत्रिका समन्वयक : | हिंदी विभाग अध्यापकगण |
| तकनीकी सहायक : | श्रीमती जूली ए. ज़ेड. |

DELHI PUBLIC SCHOOL BOPAL AHMEDABAD

CONNECT WITH US ON SOCIAL MEDIA

https://dpsbopal-ahd.edu.in/

www.youtube.com/@dpsbopal-ahmedabad

https://www.facebook.com/dpsbopal.ahmedabad

https://www.instagram.com/dps_bopal_ahmedabad/